पद्य खण्ड

हिन्दी साहित्य का इतिहास

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में साहित्य का महत्व निरूपित करते हुए कहा है– 'प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्त वृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है।'स्पष्ट है कि जनता की चित्तवृत्तियाँ और उनसे रचित साहित्य इतिहास की कालपरक स्थितियों,विचार धाराओं के अनुरूप होता है।

हिन्दी साहित्य के 1000 वर्षों के इतिहास का सिंहावलोकन करने में स्पष्टत: ज्ञात होता है कि विस्तार और विविधता की दृष्टि से इसका सीमांकन जटिल है । हिन्दी साहित्य का आरंभ विद्वानों ने सातवीं शताब्दी से स्वीकार किया है किन्तु व्यवस्थित व प्रामाणिक रूप सन 1000 ई० से प्राप्त होता है। इस आरंभिक काल को विद्वानों ने आदिकाल,वीरगाथाकाल,चारणकाल,रासोकाल, अपभ्रंशकाल का नाम दिया है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन का प्रथम प्रयास फ्रेंच विद्वान 'गार्सा द तासी' ने किया। इसी परम्परा में श्री शिवसिंह सेंगर ने शिवसिंह सरोज (संवत 1883) नामक इतिहास सम्बन्धी ग्रंथ लिखा । जनवरी 1929 में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास ' ग्रंथ लिखा।

हिन्दी का यह पहला ग्रंथ है जिसमें अत्यन्त सूक्ष्म एवं व्यापक दृष्टि विवेचन एवं विश्लेषण मिलता है।आचार्य शुक्ल के पश्चात आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी साहित्य की भूमिका, हिन्दी साहित्य उद्भव और विकास , हिन्दी साहित्य का आदिकाल रचनाएँ लिखीं। इसके अतिरिक्त डॉ० रामकुमार वर्मा का हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास (1938) तथा डॉ० धीरेन्द्र वर्मा के हिन्द सम्पादन में 'हिन्दी साहित्य ' उल्लेखनीय ग्रन्थ है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास को चार कालों में विभक्त किया गया है, जो निम्नानुसार है:–

आदिकाल(वीरगाथा काल)	संवत् 1050 से 1375
पूर्व मध्यकाल(भक्तिकाल)	संवत् 1375 से 1700
उत्तर मध्यकाल(रीतिकाल)	संवत् 1700 से 1900
आधुनिक काल	संवत् 1900 से अब तक

हिन्दी साहित्य का यह विभाजन आचार्य शुक्ल ने काल की मुख्य प्रवृत्तियों के आधार पर किया है। नामकरण व काल की सीमा तथा साहित्य में निरन्तर वृद्धि को दृष्टिगत रख इतिहास के पुनर्लेखन की भी बात उठी है क्योंकि आधुनिक काल की समयसीमा निश्चित नहीं है। इसलिए कुछ विद्वानों ने इसे 1850 से स्वीकार किया है। इस प्रकार आधुनिक काल जिसमें गद्य की प्रमुखता है अब तक है।

आदिकाल (संवत 1050 से 1375)

पृष्ठभूमि–

आदिकालीन साहित्य,राजनीतिक दृष्टि से छोटे–छोटे सामंतों में विभक्त राज्यों अथवा प्रदेशों का साहित्य है। सम्राट हर्षवर्धन की मृत्यु विक्रम संवत् 704 में हुई। इसके पश्चात किसी ने केन्द्रीय सत्ता स्थापित नहीं की वरन् खण्ड–खण्ड राज्य स्थापित हुए जो आधिपत्य के लिए युद्ध कर रहे थे। इनमें मुख्य तोमर, राठौर, चौहान, चालुक्य और चंदेल

थे। १०वीं शताब्दी के आसपास अपभ्रंश का प्रभाव क्षीण हो रहा था, और हिन्दी भाषा उसका स्थान ले रही थी इसलिए आदिकाल का साहित्य अपभ्रंश-हिन्दी का साहित्य है। प्राप्त सामग्री किसी निश्चित भाषा विषय में बँधी हुई नही हैं, फिर भी इस युग की सामग्री को इस तरह विभाजित किया गया है:-

1-विजयपाल रासो

2-हमीर रासो

3-कीर्ति लता

4-कीर्ती पताका

5-पृथ्वीराज रासो

6-जयचन्द्र प्रकाश

7-जय मयंक जस चंद्रिका

8-परमाल रासो

9-खुमान रासो

10-बीसलदेव रासो

11-खुसरो की पहेलियाँ

12-विद्यापति पदावली

लौकिक साहित्य आदिकाल की विशेष उपलब्धि है। इसमें 'ढोला-मारू रादूहा' खुसरो की पहेलियाँ उल्लेखनीय हैं। आदिकाल में गद्य साहित्य भी उपलब्ध होता है जिसमें राउलवेल, 'उक्ति व्यक्ति प्रकरण' और 'वर्ण रत्नाकर' उपलब्ध है।

आदिकाल का महत्व

आदिकाल हिन्दी साहित्य का प्रादुर्भाव काल है । इस काल का साहित्य के इतिहास में भाषा और साहित्य - चेतना की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान है । भाषा की दृष्टि से आदिकाल में उस भाषा का जन्म हुआ, जो बाद में क्रमशः विकसित होती हुई आज शासन की दृष्टि से राजभाषा और जनता की दृष्टि से राष्ट्र भाषा के रूप में प्रतिष्ठित है। साहित्यिक दृष्टि से यह युग अत्यन्त समृद्ध रहा है। इस काल में काव्य के विषय अत्यन्त व्यापक थे। भक्ति , वीरता,लोकजीवन, श्रृंगार आदि इस युग के प्रमुख काव्य-विषय थे। इस युग में प्रबंध और मुक्तक के साथ-साथ गद्य साहित्य का प्रादुर्भाव हुआ। परवर्ती हिन्दी साहित्य को विषय वस्तु एवं शिल्प-विधान की दृष्टि से आदिकालीन साहित्य ने लम्बे समय तक प्रभावित किया ।

भक्तिकाल (संवत 1375 से 1700)

भक्ति काल हिन्दी साहित्य का स्वर्णिम काल माना जाता है। इस काल में लगभग 300 वर्ष तक व्याप्त भक्ति आन्दोलन अखिल भारतीय था। इसमें विभिन्न वर्गों, वर्ण व्यवस्था,सामाजिक भेदभाव , कर्मकाण्ड के विरुद्ध आन्दोलन दिखाई पड़ता हैं। जिसमें धर्म के रूढ़ और साधनात्मक रूप की अपेक्षा भावनात्मकता से परिपूर्ण एक मानवीय भाव दिखाई पड़ता है जो मनुष्य को मनुष्य से जोड़ता है। यह भाव-बिन्दु ही भक्ति आन्दोलन का केन्द्रीय बिन्दु था । इस आन्दोलन का ऐतिहासिक आधार क्या है यदि इस दृष्टि से विचार करें तो सर जार्ज ग्रियर्सन ने ईसाई धर्म के प्रचार के

कारण इसे उत्पन्न माना तो आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दू जनता में मुगल शासन व अत्याचार के कारण उत्पन्न निराशा व असहाय भाव मन:स्थिति से जुड़ा माना किन्तु गहराई से विचार करें तो भक्ति आन्दोलन मूलत: धार्मिक, सांस्कृतिक स्वरूप पर आधारित था जिसका आधार मानवीय मूल्य थे। यह सिद्धान्त कि ईश्वर के समक्ष सभी मनुष्य एक समान है इस आन्दोलन का प्रमुख आधार था। इसलिए भक्ति काल में विभिन्न जाति, धर्म, वर्ग के भक्त कवि हैं, जो उस समाज की संरचना में योग देते हैं जिसमें जर्जर मान्यताएँ, रूढ़ परम्पराएँ, बाह्य, आडम्बर नहीं हैं। मनुष्य-मनुष्य के बीच कोई भेद और विषमता नहीं है। आपस में विश्वास और प्रेम है।

लोक भाषा से जुड़े भक्ति आन्दोलन के सूत्र गौतम बुद्ध की लोक वाणी, सिद्धों, नाथों की सर्व साधारण भाषा और महात्मा रामानन्द की जन भाषा में दिए उपदेश व भक्ति में खोजे जा सकते हैं।

भक्ति आन्दोलन को प्रमुख रूप से दो भागों में बाँटा जा सकता है:-

1- निर्गुण काव्य धारा

2- सगुण काव्य धारा

पुन: इन दो भागों को चार अन्तर्विभागों में विभाजित किया गया :-

निर्गुण धारा :-1-ज्ञान मार्गी शाखा, 2-प्रेम मार्गी शाखा

सगुण धारा :-1-राम भक्ति शाखा , 2- कृष्ण भक्ति शाखा

निर्गुण काव्य धारा और सगुण काव्य धारा में अन्तर केवल इतना है कि निर्गुण काव्य धारा के मत में **ईश्वर** निराकार है , वह अवतार नहीं लेता । सगुण काव्य धारा ईश्वर की लीलाओं व अवतार पर विश्वास करती है किन्तु दोनों धाराएँ ईश्वर के कृपालु , दयामय,करुणायुक्त स्वरूप को स्वीकार करती हैं।

1-निर्गुण काव्य धारा-

ज्ञान मार्गी शाखा- निर्गुण काव्य धारा में बाह्य,आडम्बर की तुलना में आंतरिक शुद्धता पर जोर दिया गया है। इन कवियों ने परमार्थिक सत्ता की एकता निरूपित कर जीवन को अत्यन्त सरल, निर्मल, स्वाभाविक बनाने के लिए उपदेश दिए। ज्ञान मार्गी काव्य धारा में जाति भेद, वर्ण भेद को दूर करने वाले पद, साखी, और नीति के दोहे मिलते हैं जो भक्ति की परिभाषा 'हरि को भजे सो हरि का होई' मानते थे।

इस धारा के प्रमुख कवि थे :- कबीर, दादू दयाल, गुरु नानक, रैदास, सुन्दरदास, रज्जब आदि।

कबीर इस धारा के प्रमुख कवि थे ।

इस धारा के प्रमुख कवियों पर विभिन्न साधनाओं का प्रभाव है। भाषा के लोक प्रचलित रूप का प्रयोग है। नाथ, सिद्धों और हठयोग की शब्दावली का उपयोग भी किया गया है ।

प्रेममार्गी शाखा - सन्त कवियों की ज्ञानमार्गी धारा के साथ ही सूफी या प्रेममार्गी शाखा की परम्परा भी दृष्टिगत होती है, जिसमें मुसलमान सन्त कवि सम्मिलित थे। इन कवियों ने भारतीय अद्वैतवाद में प्रेम का संयोग कर रहस्यमयी वाणी में प्रेम गाथाएँ लिखी, जिनमें भारतीय लोक गाथाओं को आधार बनाया गया था।

लौकिक प्रेम के माध्यम से इन कवियों ने अलौकिक प्रेम की अभिव्यक्ति की।

व्यावहारिक जीवन में हिन्दुओं और मुसलमानों की एकता स्थापित करने में इन कवियों ने विशेष सहायता पहुँचाई। इनकी रचनाओं में मानव मात्र को स्पर्श करने वाली, मानव से सहानुभूति रखने वाली उदार भावनाएँ थीं। दोहा चौपाई या मसनवी शैली में सूफी सन्त कवियों ने अपने आध्यात्मिक प्रेम की अभिव्यक्ति की।

इस परम्परा के प्रमुख कवि है- जायसी, कुतबन, मंझन, आलम, उसमान, शेख रहीम, नसीर आदि।

प्रमुख ग्रंथ है- पद्मावत, मृगावति, मधुमालती आदि।

सूफी कवियों ने जीव को ब्रह्म का अंश माना। गुरु की महत्ता स्वीकार कर वे मानते थे कि संसार के अज्ञान से गुरु का ज्ञान दीपक ही मुक्ति दिला सकता है। प्रेम, विरह का सशक्त चित्रण इस काव्य धारा में हुआ।

2-सगुण काव्य धारा-

भक्ति आन्दोलन में निर्गुण काव्य धारा के साथ सगुण भक्ति धारा भी मिलती है। इसका मूलाधार था कि मनुष्य का मन अस्थिर व चंचल होता है जिसे एकाग्रता के लिए अवलंबन की आवश्यकता है। अत: ईश्वर का साकार व मूर्त रूप आवश्यक है।

सगुण काव्य धारा भी दो भागों में विभक्त है-

रामभक्ति शाखा:- इस शाखा में वैष्णव मत को स्वीकार कर 'विष्णु' के अवतार रूप को महत्व दिया गया है। इसमें 'राम' के जीवन चरित्र को आधार बनाया गया तथा इनके माध्यम से समाज को आदर्श मूल्यों, स्वस्थ गुणों, सामाजिक, पारिवारिक मूल्यों की शिक्षा देने का प्रयत्न किया गया । इस शाखा में वैष्णव-शैव समुदाय का सम्मिलन करने का प्रयत्न किया गया ।

इस शाखा के प्रमुख कवि तुलसीदास, अग्रदास, नाभादास हैं।

प्रमुख ग्रंथ - रामचरित मानस, दोहावली, गीतावली, विनयपत्रिका, अष्टयाम (अग्रदास), भक्तमाल (नाभादास) रामचंद्रिका (केशवदास) हैं।

कृष्ण भक्ति शाखा:- कृष्ण भक्ति शाखा में कृष्ण के चरित्र को आधार बनाकर काव्य रचना की गई। कृष्ण भक्ति धारा में कृष्ण के प्रति वात्सल्य भाव, बाल लीलाएँ, साख्य भाव, माधुर्य भाव की व्यंजना हुई। इस धारा में अष्ट-छाप के कवि, जिनमें कुंभनदास, परमानन्द दास, सूरदास, कृष्णदास, गोविन्द स्वामी, छीत स्वामी, चतुर्भुजदास, नन्ददास प्रसिद्ध है। कृष्ण भक्ति शाखा के प्रमुख कवियों में सूरदास, मीरा, रसखान हैं।

प्रमुख ग्रंथ में सूरसागर, सूरसारावली, साहित्यलहरी, राग कल्पद्रुम, रासपंचाध्यायी, मीरा बाई की पदावली, प्रेम वाटिका आदि है।

भक्ति आन्दोलन की विशेषताएँ-

1-भक्ति आन्दोलन में एकता भाव को प्रमुख रूप से स्वीकार किया गया। रामानन्द की शिष्य परम्परा में तुलसीदास और कबीर को समान रूप से स्थान मिला। यहाँ तक कि 'मीरा' के गुरु रैदास माने जाते हैं। तुलसीदास की रामचरित मानस में भील, किरात, वन्य जातियाँ राम के साथ सम्मान पाती है।

2-ईश्वर के समक्ष सभी को एक माना गया। भक्ति आन्दोलन में वैचारिक आधार स्वरूप ऊँच-नीच, जाति व वर्ण-भेद के स्थान पर केवल मनुष्यता को स्वीकार किया गया है।

3-भक्ति आन्दोलन में जाति के स्थान पर केवल भक्ति और भक्त को स्वीकृति मिली। कबीर ने तो 'न हिन्दू न मुसलमान' ईश्वर की प्राप्ति के लिए केवल मानवीय गुण -सद्गुण, प्रेम, सहिष्णुता, पावन हृदय, सादे जीवन को महत्व दिया।

4-भक्ति आन्दोलन में रूढ़ियों, अंधविश्वासों का निषेध मिलता है। सभी संत कवियों ने धार्मिक आडम्बरों से मुक्त रहने को महत्व दिया तथा कर्मकाण्डों का विरोध किया।

5-भक्ति काल में विविधकलाओं जैसे वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीतकला को सांस्कृतिक स्तर पर

महत्व मिला। कला क्षेत्र में भी समन्वय की प्रवृत्ति थी।

6–लोक चेतना को महत्व देने के कारण सन्त कवियों ने लोक भाषाओं को महत्व दिया। महाकाव्यों में शास्त्रीय शैली तथा भक्ति पदों में सादे शब्दों में तथा मिश्रित भाषा में अभिव्यक्ति मिलती है। अवधी और ब्रज भाषा में रामचरित मानस, सूर सागर जैसे महाकाव्यों की रचना हुई।

निष्कर्ष रूप में भक्तिकाल समन्वय परक, लोक चेतना तथा सदाशयता से पूर्ण काल था।

रीतिकाल (संवत 1700 से 1900)

हिन्दी साहित्य के मध्यकाल का द्वितीय भाग रीतिकाल के नाम से जाना जाता है। इसका समय संवत 1700 से 1900 (1643 से 1843 ई.) तक माना है। इस काल की प्रमुख प्रवृत्ति 'शृंगार' थी अत: इसे शृंगार काल भी नाम दिया गया किन्तु 'रीतिकाल' नाम अधिकांश विद्वानों ने स्वीकार किया। रीतिकाल इसे लक्षण ग्रंथों के कारण कहा गया। रीतिकाल का युग सामंतों और राजाओं का युग था। रीतिकाल के अधिकांश कवि राजाओं के दरबार में आश्रित कवि थे। अत: राजाओं को प्रसन्न करने के लिए उन्होंने शृंगार प्रधान रचनाएँ लक्षण ग्रंथों के रूप में लिखीं। प्रमुख प्रवृत्ति रीति निरूपण और शृंगार थी किन्तु राजाओं की प्रशस्ति, भक्ति और नीति सम्बन्धी काव्य रचनाएँ भी हुई।

इस काल को तीन अन्तर्भागों में बाँटा जा सकता है:–

1–रीतिबद्ध कवि, 2–रीतिमुक्त कवि, 3–रीतिसिद्ध कवि

रीतिबद्ध कवि:– इस धारा के कवियों ने अलंकार, नायिका भेद आदि के लक्षण व उदाहरण के साथ काव्य रचना की। इनमें प्रमुख कवि थे– केशव, पद्माकर, मतिराम आदि।

रीतिसिद्ध कवि:– इस धारा में वे कवि हैं जो लक्षण, उदाहरण की पद्धति प्रकट रूप में नहीं अपनाते किन्तु रचना करते समय उसका ध्यान रखते है। बिहारी का काव्य इस दृष्टि से उल्लेखनीय है।

रीतिमुक्त कवि:– इस धारा के कवि स्वच्छन्द अथवा स्वतंत्र प्रवृत्ति को अपनाते है जैसे घनानन्द, आलम, बोधा, ठाकुर। इन कवियों के काव्य में रीतिबद्ध परम्परा से मुक्त काव्य आंतरिक अनुभूति से जुड़ा मिलता है जिसमें कृत्रिमता नहीं है वियोग या प्रेम वर्णन व्यथा प्रधान है।

रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं :–

1– लक्षण ग्रंथों की रचना।

2– लौकिक शृंगार की व्यंजना।

3– कला पक्ष की प्रधानता–शृंगार रस की प्रधानता तथा छंद,कवित्त सवैया,दोहा का प्रयोग किया गया।

4– प्रकृति का उद्दीपन रूप में चित्रण।

5– मुक्तक काव्य रचना। (कालिदास हजारा, सुन्दरी तिलक में रीतिकालीन मुक्तकों का संकलन है)

6– वीर काव्य भी लिखे हैं (भूषण वीर रस के श्रेष्ठ कवि थे।

7– ब्रज मिश्रित अवधी भाषा का प्रयोग, किन्तु काव्य की भाषा मुख्यत: ब्रजभाषा थी।

8– नीति और भक्ति संबंधी काव्य रचनाएँ भी की गई।

इन कवियों में वृन्द, बैताल, आलम, गुरू गोविन्दसिंह, गिरिधर, दीनदयाल गिरि का नाम महत्वपूर्ण है।

रीतिकाल में प्रमुख रूप से दो प्रकार के साहित्य का निर्माण हुआ, राजाश्रय प्राप्त साहित्य और लोक साहित्य।

राजाश्रय प्राप्त साहित्य दरबारी कवियों द्वारा लिखा गया था और लोक साहित्य भूषण, लाल, सूदन द्वारा लिखा गया। प्रथम में विलास की गंध थी दूसरे में वीरत्व की सजग भावना।

इस काल में नीतिपरक, भक्तिपरक और वीर काव्य की भी रचना हुई। काव्य भाषा प्रमुख रूप से ब्रजभाषा थी, किन्तु परिवेश के कारण फारसी का भी प्रभाव था। काव्यांग व अलंकारों का बाहुल्य होने के कारण रीतिकाल का अभिव्यंजना पक्ष तथा शिल्प महत्वपूर्ण था ।

हिन्दी साहित्य के रीतिकाल में मध्यप्रदेश के कवियों का विशेष योगदान रहा। इस काल के श्रेष्ठ कवियों में केशव, बिहारी, रसनिधि, पद्माकर, भूषण, चिन्तामणि, लालकवि, महाराज छत्रसाल एवं अक्षर अनन्य का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

केशवदास:– ओरछा नरेश इन्द्रजीतसिंह के दरबारी कवि थे। इन्हें राजगुरु के रुप में भी सम्मानित किया गया था। ये रीतिकाल के प्रथम आचार्य और महाकवि थे। केशव की भाषा बुन्देली मिश्रित ब्रज भाषा है।

पद्माकर:– पद्माकर ने सुगरा, दतिया, सागर, ग्वालियर में राजाश्रय पाया था। यहाँ सभी जगह उन्हें बहुत सम्मान मिला था। पद्माकर काव्य रीति के उत्कृष्ट ज्ञाता और रससिद्ध कवि थे। इसलिए उनका अलंकार निरूपण, रस निरूपण एवं नायिका भेद निरूपण सहृदय समाज में सदैव आकर्षण का केन्द्र रहा है।

भूषण:– हिन्दी साहित्य के रीतिकालीन श्रृंगार की चकाचौंध से परे भूषण की ख्याति वीर रस के कवि के रूप में है। भूषण की उपाधि ही इन्हें चित्रकूट के राजा रूद्र ने दी थी। बुन्देलखण्ड के महाराज छत्रसाल के यहाँ भूषण को बहुत सम्मान मिला था। उनकी कविता का प्रेरक तत्व धन लिप्सा और श्रृंगारी मनोवृत्ति नहीं थी बल्कि एक देशभक्त एवं अपार सात्विक साहस सम्पन्न व्यक्ति के प्रति श्रद्धा का अतिरेक था।

बिहारी:– बिहारी का जन्म ग्वालियर के पास बसुआ गोविन्दपुर में हुआ था। इन्होंने हिन्दी साहित्य में 'बिहारी सतसई' जैसी कृति देकर बहुत गौरव बढ़ाया है। इसमें 719 दोहे हैं। एक–एक दोहे में बिहारी ने इतना चमत्कार भर दिया है कि उसमें कवियों की कल्पना शक्ति की बेजोड़ झलक दिखाई देती है।

चिन्तामणि:– चिन्तामणि महाकवि भूषण के बड़े भाई थे। राजा महाराजाओं के यहाँ इनका बहुत सम्मान था ।

लालकवि:– इनका पूरा नाम गोरेलाल पुरोहित था। आप महाराज छत्रसाल के दरबारी कवि थे। ये कवि से बुन्देलखण्ड के राजा हो गए थे।

रसनिधि:– रसनिधि का असली नाम पृथ्वीसिंह था। ये दतिया राज्य के अन्तर्गत जागीरदार थे। इनके द्वारा रचित 'रतन हजारा ' अद्भुत ग्रंथ है।

पद्य खण्ड

कविता का स्वरूप

आचार्य विश्वनाथ ने रसयुक्त वाक्य को कविता कहा है (वाक्यं रसात्मकं काव्यम्) तथा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के मतानुसार, 'जो उक्ति हृदय में कोई भाव जाग्रत कर दे या उसे प्रस्तुत वस्तु या तथ्य की मार्मिक भावना में लीन कर दे वह काव्य है।' किसी कविता को पढ़ते या सुनते समय आनंद की जो अनुभूति होती है, साहित्य मे इसे रस कहा जाता है।

कविता के दो पक्ष होते है:–

(क)–भाव पक्ष (आंतरिक पक्ष):– भाव पक्ष के अंतर्गत भाव सौन्दर्य, अप्रस्तुत योजना, नाद सौन्दर्य, संगीत तत्व, शब्द सौन्दर्य, चित्रात्मकता, विचार सौन्दर्य आदि आते हैं। इनके द्वारा कविता की पूर्ण छवि हमारे समक्ष आती है।

पाश्चात्य विद्वानों ने कविता के चार तत्व माने हैं:- भाव, बुद्धि, कल्पना और शैली।

(ख)-कला पक्ष (बाह्य पक्ष)- कलापक्ष के अंतर्गत लय, तुक, शब्द योजना, भाषा, गुण, अलंकार एवं छंद आदि आते हैं। कविता का विषय व्यापक एवं बहुआयामी होता हैं। पाश्चात्य विद्वानों ने काव्य के दो भेद माने हैं - शक्ति काव्य एवं कला काव्य।

काव्य के रूप - हिन्दी साहित्य में काव्य के दो रूप मिलते है:-

(क) प्रबंध काव्य (ख) मुक्तक काव्य।

प्रबंध काव्य के अन्तर्गत (अ) महाकाव्य (ब) खण्ड काव्य (स) आख्यानक गीत

(अ) **महाकाव्य:-** महाकाव्य की कथावस्तु सर्गबद्ध होती है तथा एक सूत्र में बंधी रहती है। इसमें जीवन के समग्र रूप का वर्णन किया जाता है तथा प्रमुख रूप से वीर, शृंगार एवं शांत रस पाए जाते हैं तथा सर्ग के अंत में छंद बदल जाता है। 'रामचरित मानस, कामायनी, साकेत एवं कुरूक्षेत्र' आदि हिन्दी के प्रमुख महाकाव्य हैं।

(ब) **खण्ड काव्य :-** खण्ड काव्य में जीवन के एक पक्ष या रूप का वर्णन किया जाता है। कथा में एक सूत्रता रहती है। यह अपने आप में पूर्ण होता है। 'पंचवटी, जयद्रथ वध, सुदामा चरित' आदि हिन्दी के प्रमुख खण्डकाव्य हैं।

(स) आख्यानक गीत:- महाकाव्य एवं खण्ड काव्य से भिन्न पद्यबद्ध कहानी को आख्यानक गीत कहते हैं। इसमें शौर्य, पराक्रम, त्याग, बलिदान, प्रेम, करुणा आदि मानवीय भावों के प्रेरक एवं उद्बोधक घटना चित्र प्रस्तुत किए जाते हैं। नाटकीयता एवं गीतात्मकता इसकी प्रमुख विधाएँ हैं। सुभद्राकुमारी चौहान द्वारा लिखित 'झाँसी की रानी' एवं मैथिलीशरण गुप्त द्वारा लिखित 'रंग में भंग' हिन्दी के प्रमुख आख्यानक गीत हैं।

(ख) मुक्तक काव्य :- मुक्तक काव्य के भी दो भेद माने गए हैं:-

(अ) पाठ्य मुक्तक :- पाठ्य मुक्तक में विभिन्न विषयों में लिखी गई छोटी-छोटी विचार प्रधान कविताएँ आती हैं। इनमें भावों की अपेक्षा विचारों की प्रधानता होती है। कबीर, तुलसी, रहीम, बिहारी, मतिराम के नीतिपरक, भक्तिपरक एवं शृंगार परक दोहे इसके उदाहरण हैं।

(ब) गेय मुक्तक :- इसको प्रगीत भी कहते है। इनमें भावना और रागात्मकता एवं संगीतात्मकता की प्रधानता होती है। कबीर, तुलसी, सूर, मीरा के गेय पद तथा आधुनिक युग के प्रसाद, निराला, पंत तथा महादेवी वर्मा आदि की कविताएँ इसी श्रेणी की हैं।

***

भक्ति

कवि परिचय

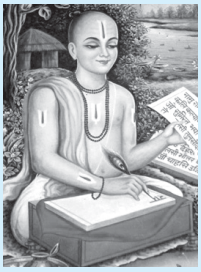

गोस्वामी तुलसीदास

गोस्वामी तुलसीदास भक्तिकाल के प्रतिनिधि कवि है। इनका जन्म संवत् 1589 में बाँदा जिले के राजापुर नामक स्थान में हुआ था। इनके पिता का नाम आत्माराम दुबे तथा माता का नाम हुलसी था। गोस्वामीजी के गुरु का नाम नरहरि दास था। तुलसीदास का निधन सं. 1680 बताया जाता है। निधन के सम्बन्ध में यह दोहा भी प्रचलित है:-

संवत सोलह सौ असी, असी गंग के तीर।

श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी तज्यौ शरीर॥

तुलसीदास जी की प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं-

रामचरितमानस, विनय पत्रिका, कवितावली, दोहावली, बरवै रामायण, जानकी मंगल, रामाज्ञा, पार्वती मंगल, वैराग्य संदीपनी, रामलला नहछु, कृष्ण गीतावली ।

कवि ने लोकजीवन को सुख शान्तिपूर्ण बनाने के लिए लोक मर्यादा की आवश्यकता का अनुभव किया। तुलसी ने राम के लोकमंगल व लोककल्याणकारी रूप को जनता के सामने प्रतिष्ठित किया है। राम राज्य की परिकल्पना उनके काव्य का प्रमुख आधार रही है । आदर्श राज्य की स्थापना आज के समय में भी प्रासंगिक है। इसलिए तुलसी जन-जन के मन में बसे हैं। तुलसीदास ने रामचरित मानस के द्वारा जनता को नवजीवन प्रदान किया। उन्होने राम और शिव को मिलाकर वैष्णवों और शैवों को एक किया। रामचरित मानस तथा अन्य ग्रन्थों में गोस्वामी जी ने भावानुकूल प्रसंगो को पहचानकर उनका विस्तृत वर्णन किया है। एक आदर्श भक्त के नाते उन्होंने

मध्यकालीन काव्य के पूर्व मध्यकाल का मुख्य स्वर भक्ति केन्द्रित है। इस काल मे भक्ति की दो मुख्य धाराओं निर्गुण शाखा और सगुण शाखा का विकास हुआ। सगुण भक्ति शाखा में कुछ कवि राम भक्त थे तो कुछ कृष्ण भक्त। निर्गुण भक्ति के कुछ कवि ज्ञान मार्गी थे तो कुछ प्रेममार्गी। ईश्वर के निराकार और साकार रूपों को आधार मानकर भक्ति साहित्य रचा गया। साकार भक्ति के अंतर्गत राम और कृष्ण की प्रमुखता है। इस धारा में भक्त अपने आराध्य के प्रति विभिन्न भाव, उद्‌गार पारंपरिक भक्ति-पद्धति के अनुसार ही अभिव्यक्त करते हैं। भक्त ने इस पद्धति में कहीं आराध्य को अपना सर्वोत्तम प्रिय मानकर उसके प्रति अपना सम्पूर्ण समर्पण प्रदर्शित किया है तो कहीं जीव-जगत सम्बंधी दार्शनिक विचारों का भी विवेचन किया है। भगवद्-भक्ति में ही जीवन की सार्थकता मानकर विषय- वासनाओं में लीन संसार की निस्सारता को व्यक्त किया है। भक्ति-काल के तुलसी ने राम की भक्ति का तथा मीरा ने कृष्ण की भक्ति का आश्रय ग्रहण किया है। जहाँ तुलसी की भक्ति दास्य भाव की थी, वहीं मीरा की भक्ति दाम्पत्य भाव प्रधान थी।

तुलसीदास और मीराबाई दोनों भक्तिकाल के प्रमुख रचनाकार हैं। इनके काव्य में इस युग की अधिकांश विशेषताएँ उपलब्ध हो जाती हैं। तुलसीदास ने मानवजीवन की सार्थकता को राम-भक्ति में ही अनुभव किया है। उन्होंने संसार में अनुरक्त जीवन की, निरर्थकता को रेखांकित करते हुए स्पष्ट किया है कि यह संसार भ्रमात्मक है। मनुष्य इसी भ्रम में फँसकर अपनी शक्तियों को नष्ट करता रहता है और अन्त में जीवन का कोई विशिष्ट फल प्राप्त नहीं कर पाता है । इसलिए भगवान के चरणों में अपने मन को पूर्ण रूप से समर्पित करके ही जीवन को सफल बनाया जा सकता है। विनय पत्रिका से संकलित प्रस्तुत पदों में तुलसीदास ने अनेक उदाहरणों के माध्यम से इसी सत्य को प्रकट किया है।

मीरा के काव्य में यद्‌यपि कृष्ण-प्रेम को ही प्रमुखता है किन्तु उन्होंने भी संसार की निस्सारता और उसकी क्षणभंगुरता की चर्चा करते हुए भगवान की भक्ति को शाश्वत माना है। वे मानती हैं कि भगवान के चरणों में अपना समर्पण करने वाला ही संसार-सागर से पार उतर सकता है, किन्तु भगवान को पाना सरल नहीं है। मीरा के काव्य में प्रेम की पीड़ा का व्यापक चित्रण है। वे मानती हैं कि प्रेम करने वाले को सब कुछ त्यागकर आराध्य के प्रति एकांतिक समर्पण करना पड़ता है। प्रेम करने की गहन पीड़ा का अनुभव मीरा के काव्य में है।

इस तरह भक्ति के मार्ग में समर्पण की भावना का विस्तार इन कविताओं में है। समर्पण से ही प्रेम उत्पन्न होता है और प्रेम की पीड़ा का अनुभव ही हमें ईश्वर के पास पहुँचाता है।

अपने इष्टदेव राम में शील शक्ति और सौन्दर्य के दर्शन किए हैं। तुलसीदास जी का भाव लोक अत्यधिक सम्पन्न है। थोड़े से शब्दों में बहुत से भावों की अभिव्यक्ति कर देना उनके काव्य का वैशिष्ट्य है। उनकी रचनाओं में सभी रसों को स्थान मिला है।

रामचरित मानस में शृंगार, हास्य, करुण, वीर, वीभत्स, शान्त, रौद्र, भयानक और अद्भुत रसों के पर्याप्त उदाहरण मिलते हैं।

भाव पक्ष के समान ही तुलसी का कला पक्ष भी पर्याप्त समृद्ध हैं। तुलसी ने अपने समय की सभी काव्य शैलियों में रचनाएँ की। जायसी की दोहा-चौपाई में उन्होंने रामचरित मानस रचा, सूर की पद शैली में उन्होंने विनय पत्रिका और गीतावली रची, भक्ति सवैया की शैली में उनकी कवितावली लिखी गई। दोहा का प्रयोग उन्होंने दोहावली में किया है। तुलसी का अलंकार विधान भी परम मनोहर बन पड़ा है। उनकी उपमाएँ भी बड़ी सुन्दर होती हैं। उनका उपमा अलंकार कहीं रूपक,कहीं उत्प्रेक्षा और कहीं दृष्टान्त बनकर बैठा है। तुलसीदास मुख्यत: अवधी भाषा के कवि हैं। उनकी भाषा में संस्कृत के तत्सम शब्दों की अधिकता है। अवधी के साथ तुलसी ने ब्रजभाषा का भी प्रयोग किया है। रामचरित मानस अवधी में तथा कवितावली, गीतावली और विनय पत्रिका ब्रजभाषा में लिखी गई हैं। उनकी भाषा का गुण साहित्यिकता है। उसमें सरलता, बोध गम्यता, सौन्दर्य, चमत्कार, प्रसाद, माधुर्य, ओज आदि सभी गुणों का समावेश है।

गोस्वामी तुलसीदास लोक कवि हैं। उनके काव्य से जीवन जीने की कला सीखी जा सकती है। तुलसीदास को गौतम बुद्ध के बाद सबसे बड़ा लोक नायक माना जाता है। अयोध्या सिंह हरिऔध ने सच ही कहा है-

''कविता करके तुलसी न लसै, कविता लसी पा तुलसी की कला।''

विनय के पद

(1)

जाऊँ कहाँ तजि चरन तुम्हारे ।
काको नाम पतित-पावन जग, केहि अति दीन पियारे ॥1 ॥
कौने देव बराइ बिरद-हित, हठि-हठि अधम उधारे ।
खग, मृग, ब्याध, पषान, बिटप जड़, जवन कवन सुर तारे ॥2 ॥
देव, दनुज, मुनि, नाग, मनुज, सब, माया-बिबस विचारे ।
तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु, कहा अपनपौ हारे ॥3 ॥

(2)

ऐसी मूढ़ता या मन की ।
परिहरि राम-भक्ति-सुरसरिता आस करत ओसकन की ॥1 ॥
धूम-समूह निरखि चातक ज्यों, तृषित जानि मति घन की ।
नहिं तहँ सीतलता न बारि, पुनि हानि होत लोचन की ॥2 ॥
ज्यों गज-काँच बिलोकि सेन जड़ छाँह आपने तन की ।
टूटत अति आतुर अहार बस, छति बिसारि आनन की ॥3 ॥
कहँ लौं कहौं कुचाल कृपानिधि, जानत हौ गति जन की ।
तुलसीदास प्रभु हरहु दुसह दुख, करहु लाज निज पन की ॥4 ॥

(3)

अबलौं नसानी, अब न नसैहौं ।
राम-कृपा भव-निसा सिरानी, जागे पुनि न डसैहौं ॥1 ॥
पायो नाम चारुचिंतामनि, उर कर ते न खसैहौं ।
स्यामरूप सुचि रुचिर कसोटी, चित कंचनहिं कसैहौं ॥2 ॥
परबस जानि हँस्यो इन इन्द्रिन, निज बस ह्वै न हँसैहौं ।
मन मधुकर पन कै तुलसी रघुपति-पद-कमल बसैहौ ॥3 ॥

कवि परिचय

मीराबाई

हिन्दी के कृष्ण भक्त रचनाकारों में मीराबाई का महत्वपूर्ण स्थान है। सामाजिक रूढ़ियों का विरोध करते हुए भी उनकी कविता में भारतीय इतिहास तथा संस्कृति की सुन्दर झलक दिखाई देती है । मीरा के जन्मकाल तथा जीवन वृत्त के विषय में बहुत मतभेद हैं परन्तु माना जाता है कि प्रेम की इस अनन्य पुजारिन का जन्म सन् 1503 ई. के लगभग राजस्थान के जोधपुर राज्य में हुआ। राणा सांगा के पुत्र भोजराज के साथ इनका विवाह हुआ , पर एक वर्ष में ही वे विधवा हो गईं। बचपन से ही मीरा कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम रखती थी । वे उन्हें ही अपना प्रिय और पति मानती थी। कभी-कभी लोक-लाज त्यागकर अपने गिरधर गोपाल के आगे नाचा करती थीं। उन्होंने स्वयं लिखा है- ''पग घुँघरू बाँधि मीरा नाची रे''। लौकिक प्रेम में उनकी रुचि और निष्ठा नहीं थी । यह राजवंश की मर्यादा के विरुद्ध था । राणा ने उन्हें मारने के लिए विष का प्याला भेजा, उसे अमृत मानकर मीरा पी गई। परिस्थिति वश मीरा राजस्थान छोड़कर द्वारका चली गईं और वहीं उनका सन् 1573 ई. के लगभग निधन हो गया।

मीराबाई ने गीत गोविन्द की टीका,नरसीजी का मायरा,राग गोविन्द तथा राग सोरठा नामक ग्रन्थ लिखे हैं।

मीराबाई हिन्दी की भक्त कवयित्री थीं। उनकी भक्ति में एकाग्रता है। उनके अनुसार संसार निरर्थक है। अत: इससे अधिक अनुराग नहीं करना चाहिए जबकि हरि अविनासी है। इसी भाव से उन्होंने अपने प्रियतम रूपी इष्ट देव की उपासना की-

मेरे तो गिरधर गोपाल , दूसरो न कोई।

जाके सिर मोर-मुकुट मेरौ पति सोई ॥

पदावली

(1)

हेरी मैं तो प्रेम दिवाणी , मेरा दरद न जाणे कोय ।

सूली ऊपर सेज हमारी, किस विध सोणा होय॥

गगन मंडल पै सेज पिया की, किस विध मिलणा होय।

घायल की गति घायल जानै, की जिन लाई होय॥

जौहरी की गति जौहरी जानै, की जिन जौहर होय।

दरद की मारी बन-बन डोलूँ, वैद मिल्या नहिं कोय॥

मीरा की प्रभु पीर मिटैगी, जब वैद सँवलिया होय।

(2)

नहिं ऐसो जन्म बारम्बार।

क्या जानूँ कछु पुन्य प्रकटे, मानुसा अवतार॥

बढ़त पल-पल घटत छिन-छिन, चलत न लागे बार।

बिरछ के ज्यों पात टूटे, लागे नहिं पुनि डार॥

भौ सागर अति जोर कहिये, विषय ओखी धार ।

सुरत का नर बाँधे बेड़ा, बेगि उतरे पार॥

साधु संता ते महंता, चलत करत पुकार।

दास 'मीरा' लाल गिरिधर, जीवना दिन चार॥

(3)

मन रे परसि हरि के चरन ।

सुभग सीतल कमल कोमल, त्रिविध ज्वाला हरन।

जे चरन प्रहलाद परसे, इन्द्र पदवी धरन॥

जिन चरन ध्रुव अटल कीन्हों, राखि अपने सरन।

जिन चरन ब्रह्मांड भेंट्यो, नख सिखौ श्री भरन॥

मीरा ने अपनी भक्ति भावना को पदों में व्यक्त किया है। उनकी सारी रचनाएँ गीत शैली में हैं। सभी पदों में आलम्बन गिरधर गोपाल हैं। ये सभी पद माधुर्य भाव से ओतप्रोत हैं।

मीरा के पद राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा में है। ''बसौ मेरे नैनन में नन्दलाल'' जैसे पदों में सूर के पदों जैसी सरसता और प्रवाह है। वियोग शृंगार का चित्रण उनके पदों में सहज ही देखा जा सकता है। मीरा के पदों में प्रसाद और माधुर्य गुणों की प्रधानता है। उनके पदों की शैली सीधी-सादी और आकर्षक है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि मीरा ने शुद्ध साहित्यिक भाषा का नहीं बल्कि जन भाषा का प्रयोग किया है।

जिन चरन प्रभु परसि लीनें, तरी गौतम घरन।
जिन चरन कालीहि नाश्यो, गोप लीला करन॥
जिन चरन धारयो गोबर्द्धन, गरब मघवा हरन।
दास'मीरा' लाल गिरिधर, अगम तारन तरन॥

अभ्यास

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **सही विकल्प चुनिए** -

(क) तुलसीदास के पद संकलित हैं-

(अ) कवितावली में (ब) गीतावली में

(स) विनयपत्रिका में (द) रामचरितमानस में

(ख) तुलसीदास के पदों में रस प्रधान है-

(अ) शान्त (ब) शृंगार

(स) वीर (द) वात्सल्य

(ग) मीराबाई भक्त थीं -

(अ) राम की (ब) कृष्ण की

(स) शिव की (द) विष्णु की

2. तुलसीदास किसके चरण छोड़कर जाना नहीं चाहते ?
3. तुलसीदास प्रण करके कहाँ बसना चाहते हैं?
4. कृष्ण ने किसका घमण्ड चूर करने के लिए गोवर्धन धारण किया था ?
5. किसी रोगी की पीड़ा को सबसे अधिक कौन अनुभव कर सकता है?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कवि के अनुसार राम के चरणों से किन-किन का उद्धार हुआ है?
2. 'करहु लाज निजपन' की पंक्ति में 'निजपन' से कवि का क्या आशय है?

3. मीरा ने अपने प्रियतम से मिलने में क्या कठिनाई बताई है?

4. मीरा के हृदय की पीड़ा को कौन-सा वैद्य दूर कर सकेगा?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. तुलसीदास के अनुसार मानव मन की मूढ़ता क्या है ?

2. तुलसीदास अपना भावी जीवन किस प्रकार बिताने का संकल्प लेते हैं?

3. मीरा ने हरि के चरणों की कौन-कौन सी विशेषताएँ बताई हैं?

निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए

(क) ऐसी मूढ़ता या ----------आपने तन की ।

(ख) अब लौं नसानी ---------- कंचनहिं कसैहों ।

(ग) बढ़त पल पल ----------पुनि डार ।

(घ) गगन मंडल पै --------- की जिन लाई होय ।

काव्य सौन्दर्य-

1. निन्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए-

निसा, आस, पषान, चरन, सुचि, पुन्य, गरव, भौसागर।

2. निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों में अलंकार पहचानकर लिखिए-

(अ) मन मधुकर पन कै तुलसी रघुपति-पद-कमल बसैहों।

(ब) ज्यों गज काँच बिलोकि सेन जड़ छाँह आपने तन की ।

(स) बढ़त पल-पल घटत छिन-छिन चलत न लागैं बार।

(द) जौहरी की गति जौहरी जाने की जिन जौहर होय

(इ) स्यामरूप सुचि रूचिर कसौटी,चित कंचनहि कसैहौं।

3. मीरा के पदों में किन-किन बोली अथवा भाषाओं के शब्दों का प्रयोग हुआ है? संकलित अंश से छाँटकर लिखिए ।

4. माधुर्य गुण में कोमलकान्त पदावली का प्रयोग किया जाता है यह गुण प्राय: शृंगार,वात्सल्य और शान्त रस में होता है । संकलित अंश से उदाहरण देकर समझाइए।

5. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों में कौन-सा रस है? उसका स्थायी भाव लिखिए -

(अ) अबलौ नसानी, अब न नसैहों ।

(ब) हेरी में तो प्रेम दिवाणी,मेरा दरद न जाने कोय।

6. गगन मंडल पै सेज पिया की, किस विध मिलणा होय। पंक्ति में कौन-सी शब्द शक्ति है?

समझिए

रस शब्द की व्युत्पत्ति '**रस्यते इति रसः**, अर्थात जिससे रस की अनुभूति की जाए। कविता आदि को पढ़ने,सुनने तथा नाटक पढ़ने, सुनने और देखने से जो आनन्दानुभूति होती है वह रस कहलाती है।

मनुष्य के अन्तःकरण में असंख्य भाव तरंगित होते रहते हैं। ये उचित अवसर आते ही उभर आते हैं। यदि कोई हँसी की बात कहे या विचित्र वेशभूषा दिखाई दे तो हमें हँसी आ जाती है। अपशब्द सुनते ही हमारी क्रोधाग्नि भड़क उठती है। अद्‌भुत क्रिया-कलाप की स्थिति हमें विस्मय में डाल देती है । कहने का आशय यह है कि समयानुकूल मन में भाव उत्पन्न होते रहते हैं। ये मन के विकार भाव ही रस निष्पत्ति के कारक हैं।

आचार्यो ने प्रत्येक रस के लिये एक-एक स्थायी भाव माना है-

रस	**स्थायी भाव**
श्रृंगार	रति
हास्य	हास
करुण	शोक
वीर	उत्साह
रौद्र	क्रोध
भयानक	भय
वीभत्स	जुगुप्सा (घृणा)
अद्‌भुत	विस्मय
शान्त	शम,निर्वेद
वात्सल्य	वत्सल,स्नेह

यहाँ निर्वेद स्थायी भाव को समझिए-

साधना मेरी अधूरी,मैं विरह में जल न पाई।

व्यर्थ बीती आयु सारी,मैं सजन की हो न पाई॥

प्रस्तुत काव्यांश में निर्वेद की व्यंजना है।

जब मानव मन सांसारिक विषय-वासनाओं से ऊबने लगता है तब उसमें विरक्ति भाव जाग्रत होने लगते हैं। मन इष्ट वस्तु के वियोगादि से अपने को धिक्कारने लगता है। फिर मन में दीनता,चिन्ता और पश्चाताप के विचार आने से निर्वेद या वैराग्य भाव जाग्रत हो जाते हैं । यह वैराग्य भाव ही शांत रस के अन्तर्गत आता है ।

संसार की असारता का अनुभव होने पर हृदयमें तत्वज्ञान या वैराग्य-भावना के जाग्रत होने पर शान्त रस निष्पन्न होता है।

7. 'ऐसी मूढ़ता या मन की परिहरि राम भक्ति सुरसरिता ,आस करत ओसकन की।', में प्रयुक्त रस और उसका स्थायी भाव लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. पुस्तकालय से विनय पत्रिका प्राप्त कर अपनी रुचि के अनुसार कुछ पद याद कीजिए तथा संकलन कीजिए।
2. विद्यालय में किसी अवसर पर कवि दरबार का आयोजन कीजिए । इसमें कक्षा के साथियों को कवियों की वेशभूषा में भक्त कवियों की कविता का सस्वर पाठ करने को कहिए ।
3. अन्य भक्तिकालीन कवियों के चित्रों का संकलन कीजिए।
4. 'भक्ति' के पदों में कुछ अन्तर्कथाएँ छिपी हैं। अन्तर्कथाओं का संकलन कीजिए।

तुलसी के पद

बराई = चुन-चुनकर। **काको** = किसका। **अपनपौ**=अपनापन। **केहि**=किसीको। **बिरद**=यश। **हठि-हठि** = हठपूर्वक। **पषान** =पत्थर, अहल्या। **खग**=जटायु पक्षी। **मृग** = हिरण, मारीचि, **व्याध** = बहेलिया। **महर्षि** =ऋषि,वाल्मीकि। **विटप** = वृक्ष। **परिहरि**= छोड़कर। **ओसकन** = ओस की बूँदें। **गच** =भूमि,दीवार। **सेन** =श्येन, बाज। **छति**=क्षति,हानि। **आनन** = मुँह, चोंच। **मूढ़ता** =मूर्खता। **निरखि** = देखकर। **अब लौं** = अब तक। **नसानी** = नष्ट की, बिगाड़ी । **सिरानी** = शान्त हो गई, बीत गई। **डसैहों** = स्वयं को डसाऊँगा। **खसैहों** = गिराऊँगा। **पन कै** = प्रण करके, प्रतिज्ञा करके। **बसैहों** = बसाऊँगा ।

मीरा के पद

विध =विधि। **जौहरी** =जौहर करने वाला। **बार** =देरी। **बिरछ** = वृक्ष। **भौसागर** =भवसागर, संसार रूपी समुद्र। **ओखी** = उसकी। **सुरत**=भगवान का प्रेम,ध्यान, स्मरण। **बेड़ा**=नावों का समूह। **परसि** = स्पर्श, छूना। **कालीहि** = कालिया नाग का। **मघवा** = इन्द्र। **अगम** =कठिन, जहाँ पहुँचा न जा सके।

टीप – जौहर –राजपूतों में यह परम्परा थी कि विपत्ति आने पर अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए स्त्रियाँ आग में जलकर भस्म हो जाती थीं।

***

'वात्सल्य '

कवि परिचय

सूरदास

सूरदास हिन्दी काव्य-जगत के सूर्य माने जाते हैं। कृष्ण भक्ति की अविरल धारा प्रवाहित करने में उनका विशेष योगदान है। महात्मा सूरदास का जन्म संवत् 1535 में मथुरा के निकट रूनकता या दिल्ली के निकट सीही ग्राम के ब्राह्मण परिवार में हुआ। वे जन्मान्ध थे। उनका कण्ठ बड़ा मधुर था। गुरु वल्लभाचार्य के सम्पर्क में आने के बाद वे पुष्टि मार्ग में दीक्षित हुए। उन्हीं की प्रेरणा से सूरदास ने दास्य एवं दैन्य भाव के पदों की रचना छोड़कर वात्सल्य, माधुर्य और सख्य भाव के पदों की रचना करना आरम्भ किया। पुष्टि मार्ग के अष्टछाप भक्त कवियों में सूरदास अग्रगण्य थे। सूरदासजी ने भक्ति, काव्य और संगीत की त्रिवेणी बहाकर भक्तों, संगीतकारों और साधारणजनों के मन को रस सिक्त कर दिया था। उनका निधन संवत् 1638 में पारसोली नामक ग्राम में हुआ।

सूरदास के तीन ग्रन्थ बताए जाते हैं- सूरसागर, सारावली, साहित्य लहरी इनमें से सूरसागर ही उनकी अमरकृति हैं।

सूरदासजी उच्च कोटि के कृष्ण भक्त थे। सूरसागर में सख्य भाव के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। प्रेम निरूपण सूर की काव्य साधना का मुख्य ध्येय है। सूरदासजी ने विनय, वात्सल्य और शृंगार तीनों प्रकार के पदों की रचना की थी। उन्होंने संयोग और वियोग दोनों प्रकार के पद रचे। सूरसागर का 'भ्रमर गीत प्रसंग' वियोग शृंगार का श्रेष्ठ उदाहरण है। सूर का वात्सल्य वर्णन हिन्दी साहित्य की एक अमूल्य निधि है। बाल रूप के चित्रण में उन्होंने कोना-कोना छान मारा है। आगे चलकर कृष्ण और राधा का प्रेम लरिकाई के रूप में

मनुष्य जीवन में बचपन का महत्वपूर्ण स्थान है। बचपन का लीला-भाव गृहस्थी को आसक्ति पूर्ण बनाता है। मनुष्य के भीतर यदि थोड़ा सा बचपन बचा रहता है तो हमारा संसार अधिक आकर्षक और अधिक शोभामय बना रहेगा। काव्य में बाल लीलाओं का वर्णन करते हुए कवि ने बालक के मनोभावों के साथ-साथ उसकी चेष्टाओं का विस्तार से विवेचन किया है। शिशु क्रीड़ाओं से मुग्ध माता-पिता जिस भाव से अभिभूत होते हैं, उसे ही वात्सल्य कहा गया है। भक्ति काल में वात्सल्य वर्णन की लंबी परंपरा प्राप्त होती है। प्राय: कृष्ण और राम के बचपन को केन्द्र बनाकर उनकी बाल-लीलाओं का चित्रण भक्त कवियों ने अनेक तरह से किया है। भक्ति काल में जीवन की मार्मिक व्यंजना के प्रसंग में वात्सल्य को व्यक्त करने वाले कवियों ने बाल मनोविज्ञान को सूक्ष्मता के साथ अनुभव किया था।

भक्तिकाल के अंतर्गत वात्सल्य वर्णन में सूरदास सिद्ध-हस्त कवि माने जाते हैं। प्रस्तुत पदों में उन्होंने श्रीकृष्ण के बालरूप का सौंदर्य चित्रण करते हुए उनके द्वारा किए जाने वाले लीला विनोद का भी वर्णन किया है। घुटनों के बल चलते हाथ में मक्खन लिए बाल कृष्ण की शोभा को एक पल भर निरखने का सुख सबसे बड़ा सुख बन जाता है। बालकृष्ण को उनके पिता नंद कहीं उनकी अंगुली पकड़कर चलना सिखाते हैं तो कहीं कृष्ण बोलने की कोशिश करते है, बालकृष्ण की इन चेष्टाओं को देखकर माता यशोदा आनंद से भर उठती है, भोजन करते हुए कृष्ण की मुद्राओं को देख-देखकर नंद और यशोदा अपने जीवन की सार्थकता का अनुभव कर रहे हैं। अपने बालसखाओं के साथ खेलते कृष्ण को बलदाऊ खिझाते हैं इससे कृष्ण रुष्ट हो जाते हैं उनकी इस मुद्रा को निरखकर नंद और यशोदा प्रसन्नता से भर उठते है। बाल लीलाओं का सहज और स्वाभाविक वर्णन इन पदों में हुआ है।

बाल्यकाल मानव जीवन का मूल आधार है। जिसका बचपन 'शुद्ध' उसी का यौवन 'समृद्ध ' और बुढ़ापा 'सिद्ध ' होगा। सूर और स्वामी रामभद्राचार्य गिरिधर के बाल-वर्णन का यही केन्द्रीय भाव है कि बालजीवन कैसा हो? जिस प्रकार सूर ने कृष्ण के वात्सल्य वर्णन द्वारा परिवार के केन्द्र में बालकृष्ण को रखा है वैसे ही स्वामी रामभद्राचार्य गिरिधर ने वात्सल्य के द्वारा राम को परिवार के केन्द्र में रखा है।

प्रकट होता है–''लरिकाई कौ प्रेम कहौ अलि कैसे छूटै?''

सूरदास की काव्य भाषा ब्रजभाषा है। लोकोक्ति और मुहावरों का भी सहज रूप में प्रयोग किया है। उनके पदों में लक्षणा और व्यंजना शब्द शक्तियों का समुचित प्रयोग मिलता है। माधुर्य और प्रसाद उसके मुख्य गुण हैं। सूर के सभी पद गेय हैं। उनकी शैली में भी विविधता है। उन्होंने अनुप्रास, यमक, श्लेष उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का प्रयोग किया है। सूरदासजी ने साधारण बोलचाल की भाषा को अपनी सुन्दर भाव-भूमि से सजाया, सँवारा और साहित्यिक रूप दिया है। सूरदास का काव्य गीतिकाव्य है। उन्हें यह गीति-शैली जयदेव, विद्यापति और कबीर से विरासत में मिली हैं। रस के आयोजन में अलंकारों के प्रयोग में और भाषा को सजाने-सँवारने में सूर भावी कवियों के पथ प्रदर्शक हैं।

भक्तिकाल के प्रमुख कवि सूरदास अपनी रचनाओं काव्य कला और साहित्यिक प्रतिभा के कारण निस्सन्देह साहित्याकाश के 'सूर' ही हैं। इन सारी विशेषताओं के कारण यह दोहा अक्षरशः सत्य है–

''सूर सूर तुलसी ससी, उडुगन केसवदास।
अब के कवि खद्योत सम, जहँ-तहँ करत प्रकाश॥''

सूर के बालक कृष्ण, नन्द और यशोदा को जहाँ लौकिक और अलौकिक क्रीड़ाओं से आनंदित करते हैं, वहीं गिरिधर के बालक राम अपनी मर्यादित एवं युगोचित बालक्रीड़ा से कौशल्या और दशरथ को ही नहीं पूरे समाज को आनंदित करते हैं। सूर और गिरिधर के कृष्ण और राम हमारी सामाजिक समरसता राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक पुनर्स्थापना के प्रतीक पुरुष के रूप में चित्रित हैं।

कृष्ण की बाललीलाएँ

(1)

सोभित कर नवनीत लिये ।
घुटुरुवन चलत रेनु मंडित मुख में लेप किये॥
चारू कपोल लोल लोचन छविगौरोचन को तिलक दिये।
लर लटकन मानो मत्त मधुप गन माधुरी मधुर पिये॥
कठुला के वज्र केहरि नख राजत है सखि रुचिर हिये।
धन्य 'सूर' एकौ पल यह सुख कहा भयो सत कल्प जिये॥

(2)

गहे अँगुरिया तात की नंद चलन सिखावत।
अरबराई गिरि परत हैं कर टेकि उठावत॥
बार-बार बकि श्याम सों कछु बोल बकावत।
दुहँधा दोउ दंतुली भई अति मुख छवि पावत॥
कबहुँ कान्ह कर छाड़ि नंद पग द्वै करि धावत।
कबहुँ धरणि कर बैठि के मन महँ कछु गावत॥
कबहुँ उलटि चलै धाम को घुटरुन करि धावत ।
'सूर' श्याम मुख देखि महर मन हर्ष बढ़ावत॥

(3)

जेंवत श्याम नंद की कनियाँ।
कछुक खात कछु धरनि गिरावत छवि निरखत नंदरनियाँ॥
बरी बरा बेसन बहु भाँतिन व्यंजन विविध अनगनियाँ।
डारत खात लेत अपने कर रुचि मानत दधि दनियाँ॥
मिश्री दधि माखन मिश्रित करि मुख नावत छविधनियाँ।
आपुन खात नन्द मुख नावत सो सुख कहत न बनियाँ॥
जो रस नन्द यशोदा बिलसत सो नहि तिहं भुवनियाँ।
भोजन करि नन्द अँचवन कियो माँगत 'सूर' जुठनियाँ॥

(4)

खेलन अब मेरी जात बलैया।
जबहिं मोहिं देखत लरिकन संग तबहि खिझत बल भैया॥
मोसों कहत तात बसुदेव को देवकी तेरी मैया।
मोल लियो कछु दे बसुदेव को करि करि जतन बटैया॥
अब बाबा कहि कहत नंद को यसुमति को कहै मैया।
ऐसेहि कहि सब मोहिं खिझावत तब उठि चलौ सिखैया॥
पाछे नंद सुनत है ठाढ़े हँसत हँसत उर लैया।
'सूर' नंद बलिरामहि धिरयो सुनि मन हरख कन्हैया॥

(5)

मैया मैं तो चंद खिलौना लैहौं।
जैहों लोटि धरनि पर अबहीं, तेरी गोद न ऐहौं॥
सुरभी कौ पयपान न करिहौं, बैनी सिर न गुहैहौं।
ह्वै हौं पूत नंद बाबा कौ, तेरो सुत न कहैहौं।
आगैं आउ, बात सुनि मेरी, बलदेवहिं न जनैहौं।
हँसि समुझावति, कहति जसोमति, नई दुलनियाँ दैहौं।
तेरी सौं मेरी सुनि मैया, अबहि बियावन जैहौं।
सूरदास ह्वै कुटिल बराती, गीत सुमंगल गैहौं॥

कवि परिचय

रामभद्राचार्य 'गिरिधर'

कवि रामभद्राचार्य 'गिरिधर' का पूरा नाम स्वामी रामभद्राचार्य है। आपका जन्म 14 जनवरी सन् 1950 को शाणीपुर, जौनपुर उ.प्र. में हुआ। दो वर्ष की अल्पायु में ही आपके नेत्रों की ज्योति सदा के लिए चली गई फिर भी आपको गीता एवं रामचरितमानस कंठस्थ हैं। आपने प्रथम कक्षा से एम.ए.तक सभी परीक्षाएँ 99 प्रतिशत अंक प्राप्त करते हुए उत्तीर्ण की हैं। यही नहीं आपने संस्कृत व्याकरण में पी.एच.डी. एवं डी.लिट. उपाधि भी प्राप्त की।

आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं–प्रस्थानत्रयी काव्य (संस्कृत में) भार्गव राघवीयम् महाकाव्य (संस्कृत) अरून्धती महाकाव्य (हिन्दी में) राघवगीत गुंजन, भक्तिगीत सुधा तथा अन्य 75 ग्रन्थ (हिन्दी)।

आपने जगद्गुरू रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय चित्रकूट की स्थापना की है। शासन ने आपको इस विश्वविद्यालय का जीवनपर्यन्त कुलाधिपति बनाया है।

आपको राष्ट्रपति द्वारा महर्षि वेदव्यास वादरायण पुरस्कार (जीवन पर्यन्त एक लाख रुपये प्रतिवर्ष), भारत सरकार नई दिल्ली द्वारा साहित्य अकादमी पुरस्कार (पचास हजार रुपये), रामकृष्ण जयमान जलमिया वाणी न्यास नई दिल्ली द्वारा दो लाख का श्री वाणी अलंकरण दिया गया।

आपकी भाषा में जहाँ एक ओर शास्त्रीयता है वहीं दूसरी ओर लोक भाषा का प्रबल प्रवाह भी है। भाव के अनुसार भाषा शैली और छन्दों का प्रयोग आपकी रचनागत विशेषता है। आपके द्वारा प्रणीत 'राघव गीतगुंजन' के 'बालकांड' से वात्सल्य पद यहाँ दिए जा रहे हैं।

राम की बाललीलाएँ

(1)

राघवजू जननी अंक लसे।
प्राची दिशि जनु शरद सुधाकर, पूरन है निकसे॥
भाल तिलक सोहत श्रुति कुण्डल, दृग मनसिज सरसे।
मनहुँ इन्दु मण्डल बिच अनुपम, मन्मध बारिज से॥
कल दंत वचन कबहुँ कहुँ किलकत बिलसत दशन हँसे।
दामिनि पटधर मनहुँ नीलधन, प्रेम अमिय बरसे॥
खेलत शिशु लखि मुदित कौसिला झाँकत आँचर से।
यह शिशु छवि लखि नित 'गिरधर' हृदय नयन तरसे

(2)

राघव जननी अंक बिराजत।
नख सिख सुभग धूरि धूसर तनु चितइ काम सत लाजत।
ललित कपोल उपर अति सोहत द्वै–द्वै असित डिठोना॥
जनु रसाल पल्लव पर बिलसत द्वै पिक तनय सलौना॥
शरद शशांक मनोहर आनन दँतुरिन लखि मन मोहे।
मनहुँ नील नीरद बिच सुन्दर चारु तड़ित तनु जोहे॥
किलकत चितइ चहूँ दिसि बिहँसत तोतरि वचन सुबोलत।
ठुमुकि ठुमुकि रुनझुन धुनि सुनि कनक अजिर शिशु डोलत॥
निरखि चपल शिशु चुटकी दै दै हँसि हँसि मातु बुलावे।
यह शिशु रूप राम लाला को 'गिरिधर' दृगनि लुभावे॥

(3)

राघव निरखि जननि सुख पावति।
सूँघि माथ रघुनाथ गोद लै प्रेम पुलकि अन्हवावति॥
पोंछि बसन पहिराइ विभूषन आशिष वचन सुनावति।
चिर जीवहु मेरे छगन मगन शिशु कहि विधि ईश मनावति।
धूरि न भरहु शीश पर लालन यों कहि तनय बुझावति॥

खेलहु अनुज सखन्ह मिलि अंगना प्रभुहिं उपाय सुझावति।
गोद राखि चुचुकारि दुलारति पुनि पालति हलरावति।
आँचर ढाँकि बदन विधु सुंदर थन पय पान करावति॥
कहति मल्हाइ खाहु कछु राघव मातु उछाइ बढ़ावति।
नजर उतारि झिगुनि जनि फेकहुँ हरिहि निहोरि बुलावति॥
देत रुचिर बहुरंग खिलौना रायहिं अजिर खिलावति।
यह झाँकी रघुवंश तिलक की 'गिरिधर' चितहिं चुरावति॥

अभ्यास

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. बालक कृष्ण के रुचिकर व्यंजन क्या हैं ?
2. 'मनहु नील नीरद विच सुंदर चारू तड़ित तनु जोहे' की उत्प्रेक्षा को लिखिए।
3. माता कौशल्या बालक राम की नजर उतारने के लिए क्या-क्या उपक्रम करती हैं?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कृष्ण के बालरूप को किस प्रकार अलंकृत किया गया है?
2. प्रस्तुत पदों में बाल स्वभाव की कौन-कौन सी प्रवृत्तियाँ प्रकट हुई हैं?
3. बालक कृष्ण खेलते समय कौन-कौन सी क्रीड़ाएँ करते हैं?
4. कवि रामभद्राचार्य गिरिधर के अनुसार बालक राघव की छवि का वर्णन कीजिए।
5. माता कौशल्या की प्रसन्नता को अपने शब्दों में लिखिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. बाल कृष्ण चन्द्र खिलौने लेने के लिए क्या-क्या हठ करते हैं?
2. कवि रामभद्राचार्य गिरिधर के पदों में बाल छवि का जो रूप उभरा है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।
3. वात्सल्य के पदों में बालक राम और बालक कृष्ण की समानताओं पर प्रकाश डालिए।
4. निम्नलिखित काव्यांशों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए-

(अ) हँसि समझावति कहति जसोमति नई दुलनियाँ दैहौं।

(आ) खेलन अब मेरी जात बलैयाँ।
जबहि मोहिं देखत लरिकन संग, तबहि खिझत बल-भैया
मौसौं कहत तात वसुदेव को, देवकी तेरी मैया।
मोल लियो कछु दे वसुदेव को करि-करि जतन वटैया॥

(इ) राघव जननी अंक विराजत।
नख सिख सुभग धूरि धूसर तनु चितई काम सत लाजत।
ललित कपोल उपर अति सोहत द्वै-द्वै असित डिठौना
जनु रसाल पल्लव पर बिलसत द्वै पिक तनय सलौना।

काव्य सौन्दर्य-

1. निम्नलिखित शब्दों में तत्सम और तद्भव शब्द पहचानकर लिखिए-
नवनीत, हिये, लिये, कपोल, अँगुरिया, धरणि, कान्ह, दधि, माखन, भैया, मैया पूरन, धूरि, गोद, शरद, माल

2. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार पहचानकर लिखिए-

अ. लर लटकन मानो मत्त मधुप गन माधुरी मधुर दिये।

आ. बार-बार बकि श्याम सों कछु बोल बकावत।

इ. जो रस नन्द यशोदा बिलसत सो नहि तिंह भुवनियाँ।

ई. मनहुँ इन्दु मण्डल विच अनुपम मन्मघ वारिज से ।

उ. ठुमुकि ठुमुकि रूनझुन धुनि सुनि-सुनि कनक अजिर शिशु डोलत।

3. अधोलिखित काव्यांश में काव्य-सौन्दर्य लिखिए-

(अ) ह्वै हौं पूत नंद बाबा को, तेरो सुत न कहै हों।
आगे आऊ बात सुनि मेरी, बलदेवहिंन बतैहों।

(आ) खेलत शिशु लखि मुदित कोसिला झाँकत आँचर से।
यह शिशु छबि लखि लखि नित 'गिरिधर' हृदय नयन तरसे।

(इ) गोद सखि चुपचारि दुलारति पुनिपालति हलरावति।
आँचर ढाँकि बदन विधु सुन्दर थन पय पान करावति॥

4. ''सूर वात्सल्य रस का कोना-कोना झाँक आए हैं।'' उदाहरण देकर समझाइए।

5. ''सूर की भाषा में ग्रामीण बोली का माधुर्य है।'' सूर की भाषा की विशेषताएँ लिखते हुए इस कथन की पुष्टि कीजिए।

आइए समझिए-

'बालकृष्ण -सी देख-देख जीती सूरत अनमोली।
पहले दिन बंसी वाले करती सुनी तोतली बोली॥
बंधी हुई दोनो मुट्ठी से वैभव लल्ला लाया।
जग की आँख दबा चुंबन में वह चुपचाप चुराया॥'

इस काव्यांश में एक मात्र हृदय की सलोनी झाँकी सरलता से देखी जा सकती है। माता का पुत्र के प्रति स्नेह

भाव कितना सहज और स्वाभाविक है। काव्य से निष्पन्न यह वत्सल भाव आनन्दित वातावरण बना रहा है।

शिशुओं की क्रीड़ाओं से आह्लादित जननी-जनक के हृदय में आनन्द भावना की निष्पत्ति वात्सल्य रस कहलाती है। वात्सल्य रस का स्थायी भाव वत्सल है।

और भी जानिए

रस के चार अवयव (अंग) हैं- स्थायीभाव, संचारी भाव, विभाव और अनुभाव।

स्थायीभाव : जो भाव मानव हृदय में स्थायी रूप से रहते हैं, उन्हें स्थायी भाव कहते हैं।

प्रत्येक रस का एक स्थायी भाव रहता है। जैसे- शृंगार का रति, वीर का उत्साह।

संचारीभाव - ये चित्त में उत्पन्न होने वाले अस्थिर मनोविकार हैं। ये स्थायी भावों को पुष्ट करने में सहायक होते हैं। इनकी स्थिति पानी के बुलबुले के समान उत्पन्न होने और समाप्त होते रहने की होती है। संचारी भावों की संख्या 33 है। कुछ प्रमुख संचारी भाव- दैन्य, मद, जड़ता विषाद, निद्रा, मोह, उग्रता, शंका, चपलता आदि हैं।

विभाव - स्थायी भावों को जाग्रत करने वाले कारक विभाव हैं। इसके दो भेद - आलम्बन और उद्दीपन है।

आलम्बन- स्थायी भाव जिन व्यक्तियों, वस्तुओं आदि का आलम्बन लेकर अपने को प्रगट करते हैं, उन्हें आलम्बन कहते हैं। आलम्बन के भी दो भेद हैं-

आश्रय - जिस व्यक्ति के मन में भाव जागृत हों।

विषय- जिस वस्तु या व्यक्ति के प्रति भाव उत्पन्न हो।

उद्दीपन - भाव को उद्दीप्त करने वाली वस्तुएँ या चेष्टाएँ उद्दीपन विभाव कहलातीं हैं।

अनुभाव- आश्रय की चेष्टाएँ अनुभाव कहलाती हैं। अनुभाव चार प्रकार के होते हैं- कायिक, मानसिक, आहार्य, सात्विक।

उदाहरण:-

जगदंबा ने बाहर आकर कहा-

नहा लो बेटा

खा पी लो थक कर आए घर जाने के दिन में लौटे हो

दुबला तन ले मुरझाया मुख

खटते औरों के हित नित

कब समझोगे अपना सुख दुख

(लोकायतन-पंत)

इसमें

रस- वात्सल्य

स्थायी भाव- वत्सल

संचारी भाव- हर्ष, चिंता

विभाव- आश्रय- जगदंबा

विषय- बेटा

उद्दीपन- दुबला तन, मुख

अनुभव - स्नेहपूर्ण कथन

6. संकलित काव्यांश से एक उदाहरण देकर उसमें निहित रस तथा उसके विभिन्न अंगों को समझाइए।

7. काव्य में माधुर्य गुण की श्रृंगार, वात्सल्य और शांत रस में सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। माधुर्य गुण में मधुर शब्द योजना और सरल प्रवाह देखते ही बनता है। देखिए-कंकन किंकन नुपूर धुनि-सुनि।

   इसी प्रकार की सुन्दर, सहज, मधुर शब्द योजना के कुछ अंश इस पाठ से छाँटकर लिखिए।

योग्यता-विस्तार

1. तुलसीदास ने 'कवितावली' और रामचरित मानस में राम की बाल छवि का मोहक वर्णन किया हैं आप 'सूर' और तुलसी के बाल-छवि वर्णन में तुलना कीजिए।

2. वात्सल्य रस से संबंधित अन्य कवियों की रचनाएँ खोजकर पढ़िए।

3. गिरिधर कवि के 'राघव गीत गुंजन' महाकाव्य से वात्सल्य से ओतप्रोत अन्य पद पढ़िए।

शब्दार्थ

प्राची-पूर्वदिशा, **अमिय**-अमृत, **पुलकि**-प्रसन्न, **सुधाकर**-चन्द्रमा, **आँचर**-आँचल, **आशिष**-आशीर्वाद, **श्रुति**-कान, **अंक**-गोद, **अँगना**- आँगन, **मनसिज**- कामदेव, **नीरद**-बादल, **दामिनि**- बिजली, **दृगनि**- आँखों, **नवनीत**-मक्खन, **रेनु**-मिट्टी, **चारु** -सुन्दर,**कपोल**-गाल, **लट**-बालों की लटें,**केहरि**-सिंह,**राजत**-सुशोभित होता है, **अरबराई**-डगमगाकर,**कर**-हाथ, **दंतुली**-छोटे छोटे दाँत, **द्वै**-दो, **हिगावत**-धीरे धीरे चलाते हैं, **महर**- यशोदा, **जुठनियां**- जूठन (बचा खुचा खाना), **खिझत**-गुस्सा होना, **हाउ**-हौआ, **मोरी**-मरोड, **सांझ**-संध्या,**सकारे**-सुबह,**धूरि झारि**-धूल झाड़कर, **तातौ**-गरम,**परसि**-लगाकर, **सरस वसन**-सुन्दर वस्त्र, **पौढ़ाई** -लिटाकर, **सुरभी**-गाय,**जनैहो**-बताऊँगी,तेरी **सौं**-तेरी सौगंध, **बियावन**-विवाह करने,

***

प्रेम और सौन्दर्य

कवि परिचय

पद्माकर

पद्माकर रीतिकाल के श्रेष्ठ कवियों में से एक हैं। इनके पूर्वज दक्षिण के तेलंग ब्राह्मण थे। पद्माकर के पिता मोहनलाल भट्ट सागर में बस गए थे। यहीं पद्माकर जी का जन्म सन् 1753 में हुआ । सागर के तालाब घाट पर पद्माकरजी की मूर्ति स्थापित है। पद्माकर एक प्रतिभा सम्पन्न कवि थे। इन्हें कवित्त शक्ति वंश परम्परा से ही प्राप्त थी। मात्र 9 वर्ष की उम्र में ही वे कविता लिखने लगे थे।

पद्माकर राज दरबारी कवि थे। राजाओं की प्रशंसा में उन्होंने हिम्मत बहादुर विरुदावली, प्रतापसिंह विरुदावली और जगत विनोद की रचना की। जीवन के अंतिम समय में उन्हें कुष्ठ रोग हो गया। उससे मुक्ति के लिए गंगाजी की स्तुति में 'गंगा लहरी' लिखते हुए यहीं उनका 80 वर्ष की आयु में सन् 1833 में निधन हो गया।

पद्माकर जी के रचित ग्रंथ है- पद्माभरण जगत विनोद, आलीशाह प्रकाश, हिम्मत बहादुर विरुदावली, प्रतापसिंह विरुदावली, प्रबोध पचासा, गंगालहरी, राम रसायन।

पद्माकर जी का सम्पूर्ण जीवन राजाश्रयों में ठाट-बाट पूर्वक बीता। इसलिए उनके काव्य में प्रेम और शृंगार का प्राधान्य है वैसे उनके काव्य में रीतिकाल की सभी विशेषताएँ और परम्पराएँ विकसित हुई हैं। उन्होंने शृंगार के दोनों पक्षों संयोग और वियोग का वर्णन किया है।

पद्माकर का प्रकृति-चित्रण विशेष रूप से षट् ऋतु वर्णन बहुत प्रसिद्ध है। अपने अंतिम दिनों में

प्रेम ईश्वर का ही रूप है। लौकिक प्रेमानुभूति ही अलौकिक प्रेमानुभूति का आधार है। लौकिक प्रेम, मानवीय, रचनात्मकता से संबंधित है।

प्रेम का विस्तार भक्ति, वात्सल्य और दाम्पत्य भाव के अंतर्गत होता है। प्रेम की पृष्ठभूमि रति स्थायी भाव से निर्मित है। इसलिए शृंगार रस का स्थायी भाव रति है। शृंगार के संयोग और वियोग दो भेद होते है। संयोग में प्रिय की रूपचेष्टा, आदि का वर्णन किया जाता है, जबकि वियोग में प्रिय से अलग होने की स्मृतिजन्य, वेदना-व्यथा का वर्णन होता है। हिन्दी काव्य के इतिहास में प्रेम की केन्द्रीय भूमिका रही है। इसी आधार पर शृंगार पर आधारित काव्य प्राय: प्रत्येक युग में प्रचुर मात्रा में रचा गया। भक्ति काल में ईश्वरीय प्रेम और ईश्वरीय सौन्दर्य के वर्णन के प्रसंग प्राप्त होते हैं तो रीतिकाल में लौकिक प्रेम के क्षेत्र में नारी-पुरुष, या नायक-नायिकाओं के मिलन-विरह के भाव चित्र प्राप्त होते हैं। रीतिकाल को शृंगार काल भी कहा गया है।

इस काल में शृंगार की अनेक भाव दशाओं का जीवंत और प्रभावशाली वर्णन कवियों ने किया है। केशव, बिहारी, घनानंद, पद्माकर, मतिराम, सेनापति आदि कवियों ने प्रेम और सौन्दर्य के आकर्षक दृश्य प्रस्तुत किए हैं।

पद्माकर के काव्य में प्रेम और शृंगार का अनुभूतिपरक चित्रण हुआ है। राधा-कृष्ण की शृंगारिक लीलाओं के वर्णन में कवि ने मिलन-विरह के अनूठे संदर्भ उद्घाटित किए हैं। प्रस्तुत पदों में पद्माकर ने फाग खेलते कृष्ण की चेष्टाओं को अपनी आँखों में बसाये राधा की अनुरक्ति का, कृष्ण की बाँसुरी के स्वर में सुध-बुध भुला बैठी गोपिका का, सावन के झूलों पर झूलते नायक-नायिका के भीतर विकसित होते नेह-दुलार- का तथा निर्मोही कृष्ण की स्मृतियों में डूबी गृह-कार्यों से उदासीन राधा की मनोदशा का हृदय-ग्राही वर्णन किया है। राधा-कृष्ण के एकांतिक प्रेम दशा का विवेचन और उनके प्रेम परिपूर्ण बहानों का उल्लेख करके पद्माकर ने मनोभावों की सूक्ष्मता को स्पष्ट किया है।

मतिराम का शृंगार वर्णन अद्वितीय है। राधा-कृष्ण के रूप सौंन्दर्य, चेष्टा-सौन्दर्य और शील सौंन्दर्य का वर्णन मतिराम ने अपने काव्य में विदग्धता से किया है। प्रस्तुत काव्यांशों में उन्होंने राधा-कृष्ण के अपरिमित प्रेम, उनकी मिलन चेष्टाओं, उनके रूप-सौन्दर्य, उनकी अनुरागमयी लीलाओं और उनकी मान मनुहार का क्रियात्मक वर्णन किया है। मिलन-वियोग में मतिराम ने राधा-कृष्ण के माध्यम से शृंगार रस के विभाव, अनुभाव और संचारी भावों का मधुरिम चित्रण किया है।

शारीरिक कष्टों के कारण उनका झुकाव भक्ति की ओर हुआ । गंगा लहरी, प्रबोध पचासा, राम रसायन में उनकी भक्ति भावना और वैराग्य की भावना प्रकट हुई है।

पद्माकर ने ब्रज भाषा में काव्य रचना की है। उनकी प्रारम्भिक कविताओं में बुन्देली का प्रभाव है। उसमें कहीं-कहीं उर्दू, फारसी के प्रचलित शब्द भी मिलते है। भाषा पर उनका अधिकार था । उनकी रचना में यथा स्थान अलंकारों का प्रयोग हुआ है। अनुप्रास का उनकी भाषा में प्रचुरता से प्रयोग हुआ है। एक उदाहरण देखिए-

कूलन में, केलिन में,कछारन में , कुंजन में।
क्यारिन में, कलिन कलीन किलकंत है॥

अनुप्रास के अतिरिक्त इन्होंने यमक, श्लेष,उपमा,उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का भी प्रयोग किया है। उनकी रचनाओं में लोकोक्तियाँ और मुहावरों का भी सफलता के साथ प्रयोग हुआ है। जैसे :-

नैन नचाई कही मुसकाई,लला फिरि आइयो खेलन होरी।

पद्माकर नि:संदेह रीतिकाल के श्रेष्ठ कवियों में से एक थे। इनकी भाषा की विशेषता बताते हुए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है 'भाषा की सब प्रकार की शक्तियों पर इनका अधिकार दिखाई पड़ता है। इनकी भाषा में वह अनेक रूपता है जो एक बड़े कवि में होना चाहिए।' अनुप्रास द्वारा ध्वनि चित्र खड़ा करने में भी वे अद्वितीय हैं। वस्तुत: पद्माकर रीतिकालीन परम्परा के उत्तरार्द्ध के प्रतिनिधि कवि है।

आरस सो आरत सम्हारत न सीस-पट,
गजब गुजारति गरीवन की धार पर।
कहें पद्माकर सुरासो सरसार तैसे,
बिथुरि बिराजै बार हीरन के हार पर।
छाजत छबीले छिति छहरि हरा के छोर,
भोर उठि आई केलि-मन्दिर के द्वार पर।
एक पग भीतर औ एक देहरी पै धरै,
एक कर कंज, एक कर है किबार पर।। 5॥

पद्माकर के छन्द

एकै संग धाय नन्दलाल औ गुलाल दोऊ
दृगनि गए जुभरि आनन्द मढ़ै नहीं।
धोइ-धोइ हारी पद्माकर, तिहारी सौं,
अब तो उपाय एकौ चित पै चढ़ै नहीं॥
कैसी करो कहाँ जाऊँ कासौं कहौं कौन सुनै।
कोऊ तो निकासौ जासौ दरद बढ़ै नहीं।
ऐरी मेरी वीर जैसे तैसे इन आँखिन तैं।
कढ़िगो अबीर पै अहीर तो कढ़ै नहीं॥1॥

आई संग आलिन के ननद पठाई नीठि।
सोहति सुहाई सीस ईडुरी सुघट की।
कहै पद्माकर गम्भीर जमुना के तीर।
नीर लागी भरन नवेली नेह अरकी।
ताही समै मोहन सु बांसुरी बजाई।
तामै मधुर मलार गाई ओर बंसीवट की।
तल लगि लटकी रहीं न सुधि घूंघट की।
घटकी न औघट की घाट की न घर की।। 2॥

भौरन कौ गुंजन बिहार बनकुंजन में,
मंजुल मलहारन को गावनो लगत है।
कहैं पद्माकर गुमान हूँ ते मानहूँ ते
प्राण हूँ तैं प्यारो मनभावनों लगत है।
भोरन को सोर घनघोर चहुँ ओरन,
हिंडोरन को वृंद छवि छावनो लगत है।
नेह सरसावन में मेह बरसावन में,
सावन में झूलियो सुहावनो लगत है॥ 3॥

घर न सुहात न सुहात वन बाहिर हू।
बागन सुहात जो खुसाल सुखबोही सों।
कहै पद्माकर घनेरे धन धाम त्यौं ही
चैंन न सुहात चाँदनी हूँ जोग जोही सों॥
साँझ हूँ सुहात न सुहात दिन माँझ कछु।
ब्याही यह बात सो बखानत हो तोही सों।
साँझ हूँ सुहात ना सुहात परभात आली।
जब मन लागि जात काई निरमोही सौं॥ 4॥

कवि परिचय

मतिराम

मतिराम सौन्दर्य वर्णन में अद्वितीय हैं। मतिराम के दोहे बिहारी के दोहों की समता रखते हैं। हिन्दी साहित्य में यह एक उदाहरण है, जब दो सगे भाई मतिराम और भूषण उच्च कोटि के कवि हुए। कविता के क्षेत्र में इन दोनों ने उत्कृष्ट ख्याति प्राप्त की। कविवर मतिराम के पिताजी का नाम रत्नाकर था। ये कानपुर के एक गाँव तिकवांपुर के रहने वाले थे। इनका जन्म 17वीं शताब्दी में हुआ। वे बून्दी के महाराज भावसिंह के दरबारी कवि थे। जन्म तिथि के समान ही मतिराम के निधन के सम्बन्ध में भी विवाद है।

मतिराम के लिखे कुल नौ ग्रंथ बताए जाते हैं। किन्तु उनमें से 4 ग्रंथ ही उपलब्ध हैं। वे हैं–फूल मंजरी, रसराज, ललित ललाम और मतिराम सतसई। इस सतसई में 703 दोहे हैं।

यों तो मतिराम रीतिबद्ध कवियों में शामिल किये जाते हैं, किन्तु उनकी रचनाएँ कृत्रिमता से कोसों दूर हैं। सहज प्रेम के मर्म स्पर्शी चित्रों में जो भाव व्यक्त किए गए हैं वे सभी साधारण जनों की सामान्य अनुभूति के अंग हैं।

मतिराम की भाषा के विविध रूप दृष्टिगोचर होते हैं। उनकी भाषा विशुद्ध ब्रजभाषा है। वे अलंकारों के फेर में नहीं पड़े हैं। माधुर्य तो इनके काव्य में सबसे अधिक है। मतिराम का एक ग्रंथ है,'रसराज'। इसमें शृंगार रस का वर्णन अधिक नही है, अलंकारों का ही वर्णन अधिक है। उनकी कविता में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, व्यतिरेक, अतिशयोक्ति आदि अलंकारों का उपयुक्त प्रयोग हुआ है। मतिराम का अलंकार विधान स्वाभाविक है। इससे उनकी रचना में सौन्दर्य आ गया है। मतिराम रीतिकाल के शीर्षस्थ कवियों में माने जाते हैं। उनकी कविता की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि जहाँ अन्य कवि केवल अन्तिम

मतिराम के छन्द

॥ 1 ॥

कुंदन कौ रंग फीको लगै, झलकैं अति अंगन चारु गुराई।
आँखिन में अलसानि चितौन में मंजु बिलासन की सरसाई।
को बिन मोल बिकात नहीं, मतिराम लहै मुसकानि मिठाई।
ज्यों–ज्यों निहारिए नेरे ह्वै नैनहिं, त्यों–त्यों खरी निकरै सी निकाई॥

॥ 2 ॥

कोऊ नहीं बरजै मतिराम रहो तितही जितही मन भायो।
काहे कौ सौंहे हजार करौ, तुम तो कबहूँ अपराध न ठायो।
सोवन दीजै, न दीजै हमें दुख, यों ही कहा रसवाद बढ़ायो।
मान रहोई नहीं मनमोहन मानिनी होय से सो मानैं मनायो॥

॥ 3 ॥

मोर–पखा 'मतिराम' किरीट मनोहर मूरति सौं मनु लैगो।
कुंडल डोलनि, गोल कपोलनि, बोल सनेह के बीज–से बैगो।
लाल बिलोचनि–कौलनि सौं मुसकाइ इतैं अरुझाइ चितैगों।
एक घरी घन से तन सौं अँखियान घनो घनसार सो दैगो॥

॥ 4 ॥

मोर–पखा 'मतिराम' किरीट में कंठ बनी बनमाल सुहाई।
मोहन की मुसकानि मनोहर, कुंडल डोलनि मैं छबि छाई।
लोचन लोल बिसाल बिलोकनि कौ न बिलोकि भयो बस माई।
वा मुख की मधुराई कहाँ कहौं? मीठी लगै अँखियान लुनाई॥।

चमत्कार पूर्ण चरण के लिये शेष तीन चरणों का पूरक विधान किया करते थे, मतिराम के सवैए चमत्कार के फेर मे न पड़कर समग्रता में प्रभाव उत्पन्न करते हैं। इसीलिए सहज कृतित्व की दृष्टि से रीतिकालीन कवियों में मतिराम का स्थान बहुत ऊँचा है। यह लक्षण ग्रंथ प्रणेता एवं ख्याति प्राप्त उच्च कोटि के व्यक्तित्व हैं। इन्हें आचार्य एवं महाकवि कहा जा सकता है।

॥ 5 ॥

गोप सुता कहै गौरि गोसाँइनि, पायँ परौं विनती सुनि लीजै।
दीन दयानिधि दासी के ऊपर, नेकु सुचित्त दया रस भीजै।
देहि जो ब्याहि उछाह सो मोहनै, मातु-पिताहु को सो मन कीजै
सुंदर साँवरों नन्दकुमार, बसै उर में बरु सो बरुदीजै॥

अभ्यास

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. गोपिका की आँखों में कौन से दो तत्व भर गए हैं?
2. पद्माकर की गापियों को सुबह शाम और घर बाहर अच्छा क्यों नहीं लगता है?
3. गोप-सुता पार्वती माँ से क्या वरदान माँगती है?
4. ''वा मुख की मधुराई कहाँ-कहौ?'' में मतिराम ने किस मुख की ओर संकेत किया है?
5. श्री कृष्ण के मुकुट में कौन-सी वस्तु लगी हैं?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. गोपियों पर कृष्ण की वंशी का क्या प्रभाव पड़ता है ? लिखिए।
2. 'मान रहोई नहीं मन मोहन मानिनी होय सो मानै मनायों' का आशय स्पष्ट कीजिए।
3. मतिराम के शब्दों में श्री कृष्ण की छवि का मोहक वर्णन कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. गोपिका श्री कृष्ण की छवि को नेत्रों से बाहर निकालने में क्यों असमर्थ है?
2. 'को बिन मोल बिकात नहीं,' कवि ने ऐसा क्यों कहा है? समझाइए।
3. आशय स्पष्ट कीजिए-

क. कुंदन को रंग फीको लगे झलके अति अंगन-चारु गुराई।

ख. एक पग भीतर औ एक देहरी पै धरे, एक कर कंज, एक कर है किबार पर।

ग. नेह सरसावन में मेह बरसावन में, सावन में झूलियों सुहावनो लगत है।

4. निम्नलिखित काव्यांश की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए–

अ. कैसी करो कहाँ जाऊँ कासौं कहौं कौन सुने,
कोउ तौ निकासौ जासौ दरद बढ़ै नहीं।
एरी मेरी बीर! जैसे तैसे इन आँखिन तैं
कढ़िगो अबीर पै अहीर तो कढ़े नहीं।

आ. कुन्दन कौ रंगु फीको लगे, झलके अति अंगन चारू गुराई,
आँखिन में अलसानी चितौन में मंजु विलासन की सरसाई ।
को बिन मोल बिकात नहीं, मतिराम लहै मुस्कानि मिठाई,
ज्यौं–ज्यौं निहारिए नेरे ह्वै, त्यौं त्यौं खरी निकरै सी निकाई॥

काव्य सौन्दर्य–

1. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए:–
मोल, नेरे, मूरति, सनेह, घरी, देहरी, किबार, सौंह, घूंघट

2. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार, उनके सामने दिए गए विकल्पों में से छाँटकर लिखिए:–

(अ) घटकी न औघट की घाट की न घर की। (यमक/ श्लेष/अनुप्रास)

(आ) छाजत छबीले छिति छहरि हरा के छोर (अनुप्रास/यमक/श्लेष)

(इ) ज्यों–ज्यों निहारिए नेरे ह्वै नैनहिं,
त्यों–त्यों निकरै सी निकाई, (उपमा/पुनरूक्ति/रूपक)

(ई) एक घरी घन से तन सौं, अँखियान घनो घनसार सौ दैगो। (उपमा/रूपक/उत्प्रेक्षा)

3. काव्य में भाव–सौन्दर्य और शब्द विन्यास का अन्योन्याश्रित संबंध रहता है एक के बिना दूसरे की कल्पना करना कठिन हो जाता है। ऐसे स्थल मतिराम जैसे कवियों की रचनाओं में कलात्मक उपलब्धि की दृष्टि से बहुत श्रेष्ठ बन पड़े हैं। ऐसा ही भाव सौन्दर्य और शब्द सौन्दर्य का उदाहरण देखिए–
''मान रह्योई नहीं मनमोहन मानिनी होई सो मनायो'' इस प्रकार के अन्य उदाहरण इस संकलन से चुनकर लिखिए।

समझिए–

नगर से दूर कुछ गाँव की सी बस्ती एक – 16 वर्ण
हरे भरे खेतों के समीप अति अभिराम।
जहाँ पत्रजाल अन्तराल से झलकते हैं
लाल खपरैले श्वेत छज्जों के संवारे धाम।
बीचों–बीच वह वृक्ष खड़ा है विशाल एक
झूलते हैं बाल कभी जिसकी लताएँ थाम।

चढ़ी मंजु मालती लता है जहाँ छायीं हुई
पत्थर के पहियों की चौकियाँ पड़ी हैं श्याम

इस छंद में एक चरण में कुल 32 वर्ण है इसमें 8-8 पर यति से 32 वर्ण होते है। इस छन्द को घनाक्षरी छंद कहते हैं।

जाके पद माँहि हौंहि बरण बत्तीस सब।
और भेद नाँहि कोह अंत्य लघु नित्य धरि॥
घनाक्षरी छंद सोय सबै कवि लोग कहैं।
सोला अरू सोला परि बिरत विचार करि

छंदरत्नावली-हरिरामदास

घनाक्षरी छंद में भी यह रूप घनाक्षरी छंद है।

घनाक्षरी छंद का एक और भेद-देव घनाक्षरी है। देव घनाक्षरी के प्रत्येक चरण में 8-8-8 और 9 पर यति देकर तैतीस वर्ण होते हैं। इसमें चरणांत में तीन लघु वर्ण होते हैं। उदाहरण -

झिल्ली झनकारें, पिक चातक पुकारै बन -16
मोरनि गुहारैं उठैं जुगनूँ चमकि-चमकि - 17
घोरे घन कारे भारे धुरवा धुरारैं धाय
धूमनि मचावैं नाचें दामिनि दमकि-दमकि।

विशेषः- कतिपय विद्वानों ने घनाक्षरी छंद को 'कवित्त' भी स्वीकारा है।

4. पद्माकर के संकलित छंदों में से रूप घनाक्षरी छंद को पहचानकर लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. राधकृष्ण के अलौकिक प्रेम पर आधारित काव्यांशों का संकलन कीजिए।
2. रीतिकाल में भाव सौंदर्य और काव्य सौन्दर्य का माणिकांचन उपयोग हुआ है। ऐसे श्रेष्ठ काव्यांशों का संकलन कीजिए।
3. ब्रज की होली बाँसुरी, यमुना, सावन के झूलों पर आधारित काव्यांशों का संकलन कीजिए और कंठस्थ कीजिए।

शब्दार्थ

अबीर *-गुलाल,* ***वृन्द****-समूह,* ***दृगनि*** -आँखों में । ***कासौं***-किससे। ***कुंदन***-सोना। ***चारु***- सुंदर। ***निहारिये***-देखिए। ***नेरे***-समीप। ***बरजै***- मनाकरना ***किरीट***-मुकुट। ***आरूझाइ***-उलझाना। ***कपोल***-गाल। ***घन***-बादल । ***गौरि***-पार्वती। ***पायं परौ***- पैर पड़ती हूँ। ***नेकु***-तनिक। ***बरू***-वरदान। ***गुमान*** = घमंड। ***हारी***- थक गई। ***सौंह***-सौगंध । ***नीर***-पानी। ***बोर***-किनारे । ***आलिन***-सखियों। ***केलि***-क्रीड़ा। ***नवेली***-नवयुवती। ***कंज***-कमल

***

रीतिकालीन कवि वृन्द

कवि परिचय

रीतिकालीन परम्परा के अन्तर्गत वृन्द का नाम आदर के साथ लिया जाता है। इनके नीति के दोहे बहुत प्रसिद्ध हैं। वृन्द का जन्म संवत् 1700 में जोधपुर राज्य के अंतर्गत मेड़ता नामक गाँव में माना जाता है। इनका पूरा नाम वृन्दावन था। काशी में इन्होंने व्याकरण, साहित्य, वेदान्त, गणित आदि का ज्ञान प्राप्त किया और काव्य रचना सीखी। मुगल सम्राट औरंगजेब के यहाँ ये दरबारी कवि रहे। संवत् 1764 में किशन गढ़ के राजा राजसिंह ने वृन्द को औरंगजेब के पौत्र अजीमुशशान से मांग लिया था। किशनगढ़ में संवत् 1780 ई.वृन्द का निधन हुआ।

वृन्द ने बारहमासा, भाव पंचासिका,नयन पचीसी, पवन पचीसी , शृंगार शिक्षा, यमक सतसई पुस्तकों की रचना की। इनके लिखे दोहे 'वृन्द विनोद सतसई' में संकलित हैं।

वृन्द के 'बारहमासा' में बारहों महीनों का सुन्दर वर्णन है। 'भाव पंचासिका' में शृंगार के विभिन्न भावों के अनुसार सरस छंद लिखे हैं। 'शृंगार शिक्षा' में नायिका भेद के आधार पर आभूषण और शृंगार के साथ नायिकाओं का चित्रण है। नयन पचीसी में नेत्रों के महत्व का चित्रण है। इस रचना में दोहा, सवैया और घनाक्षरी छन्दों का प्रयोग हुआ है। पवन पचीसी में ऋतु वर्णन है।

हिन्दी में वृन्द के समान सुन्दर दोहे बहुत कम कवियों ने लिखे हैं। उनके दोहों का प्रचार शहरों से लेकर गाँवों तक में है। पवन पचीसी में 'षड्ऋतु' वर्णन के अन्तर्गत वृन्द ने पवन के वसंत, ग्रीष्म, वर्षा,शरद, हेमंत और शिशिर ऋतुओं के स्वरूप और प्रभाव का वर्णन किया है।

वृन्द की रचनाएँ रीति परम्परा की हैं ।उनकी 'नयन पचीसी' युगीन परम्परा से जुड़ी कृति हैं।

काव्य जीवन को संस्कारित करता है। अगली पीढ़ियों तक जीवन के उच्च अनुभवों को संप्रेषित करने की शक्ति काव्य में होती है। जीवन जीना यदि एक कला है तो इस कला की शिक्षा काव्य में समायी रहती है। व्यक्ति और समाज के स्वस्थ तालमेल में ही व्यक्ति के स्व विकास की सही भूमिका निर्धारित होती है। इस तरह से जीवन-विकास की शिक्षा देने वाला काव्य ही नीतिपरक काव्य कहा जाता है। सभी युगों में कविता का जीवन-शिक्षा से संबंध रहा है। मध्य युग में तो जीवन-शिक्षा को अपनी कविता का केन्द्रीय भाव बनाने वाले अनेक रचनाकार रचनारत रहे हैं। गिरिधर, वृन्द, रहीम के साथ-साथ जायसी, तुलसीदास और बिहारी आदि कवियों ने अपने काव्य में नीति को स्थान दिया है।

वृन्द के दोहे जीवन-शिक्षा के कोश हैं। उनका प्रत्येक दोहा जीवन के किसी न किसी अमूल्य अनुभव से परिपूर्ण है। प्रस्तुत दोहों में वृन्द ने अनेक शिक्षाप्रद जीवन-सूत्रों को संकलित किया है। अवसर के अनुकूल कही गई बात ही महत्वपूर्ण मानी जाती है। किसी को धोखा देकर एक बार सफलता पाई जा सकती है, किन्तु बार-बार नहीं। व्यक्ति की पहचान उसकी वाणी से हो जाती है। किसी भी कार्य को करने में जल्दबाजी अच्छी नहीं होती है। अज्ञानी व्यक्ति को उसके हित में कही बात भी खराब लग जाती है, इसलिए ऐसे आदमी से हित की बात करना भी उचित नहीं है। सरस्वती का भंडार इस रूप में अपूर्व है कि उसे जितना खर्च किया जाता है वह उतना बढ़ता है। ज्ञान का वितरण ही वितरणकर्ता को और ज्ञानवान बनाता है। इस तरह के नीति कथनों को वृंद ने अनेक उत्प्रेक्षाओं के माध्यम से अभिव्यक्ति किया है।

रहीम के दोहे जनसामान्य में आज भी प्रचलित हैं। उनके दोहे किसी मूल्यवान सूक्ति से कम नहीं हैं। प्रस्तुत दोहों के अनुसार सुख और दुख में अपनी शांति को बनाए रखनेवाला व्यक्ति ही बड़ा है। अच्छे लोग परोपकार के लिए ही संपत्ति इकट्ठी करते हैं। धन का घटना-बढ़ना तो धनिकों के लिए चिंता का विषय है। जो घास-पात खाकर जीवन गुजारते हैं उनको इससे क्या लेना-देना। दीनबन्धु जैसा बनने के लिए दीनों की चिन्ता करना आवश्यक है। दूसरों के घर बार-बार जाने वाला अपनी ही गरिमा को कम कर लेता है। दुर्दिनों से बचने के लिए यदि खराब जगह आश्रय ही लेना पड़े तो ले लेना चाहिए। सबको बस में कर लेने की ताकत प्रेम में ही है। गुणीजन और राजा में समानता है। इनमें कोई छोटा -बड़ा नहीं है। विपत्ति व कसौटी पर शत्रु -मित्र परखे जाते है। जीवन के विस्तृत विचार बोध के कवि रहीम के दोहों में शिल्प सौंदर्य का अनुपम दर्शन होता है।

इसमें दोहा, सवैया और घनाक्षरी छंदों का प्रयोग हुआ है। इन छंदों का प्रभाव पाठकों पर पड़ता है। 'यमक सतसई' में विविध प्रकार से यमक अलंकार का स्वरूप स्पष्ट किया गया हैं। इसके अन्तर्गत 715 छंद है।

वृन्द के नीति के दोहे जन साधारण में बहुत प्रसिद्ध हैं। इन दोहों में लोक-व्यवहार के अनेक अनुकरणीय सिद्धांत हैं। वृन्द कवि की रचनाएँ रीतिबद्ध परम्परा में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। इन्होंने सरल, सरस और विदग्ध सभी प्रकार की काव्य रचनाएँ की हैं।

वृन्द के दोहे

फीकी पै नीकी लगै, कहिये समय विचारि
सबको मन हर्षित करै, ज्यों विवाह में गारि।।1।।

नीकी पै फीकी लगै, बिन अवसर की बात।
जैसे बरनत युद्ध में, रस श्रृंगार न सुहात ॥2॥

जो जेहि भावे सो भलौ, गुन को कछु न विचार।
तज गजमुक्ता भीलनी, पहिरति गुंज्जा हार ॥3॥

फेर न ह्वै है कपट सों, जो कीजे व्यौपार।
जैसे हांडी काठ की, चढ़ै न दूजी बार ॥4॥

नयना देय बताय सब, हिय को हेत अहेत।
जैसे निर्मल आरसी, भली बुरी कहि देत ॥5॥

हितहू की कहिये न तिहि, जो नर होय अबोध।
ज्यों नकटे को आरसी, होत दिखाये क्रोध ॥6॥

कारज धीरै होतु है, काहै होत अधीर।
समय पाय तरुवर फलै, केतक सींचो नीर ॥7॥

ओछे नर के पेट में, रहै न मोटी बात।
आध सेर के पात्र में, कैसे सेर समात ॥8॥

कहा कहौं विधि को अविधि, भूले परे प्रबीन।
मूरख को सम्पति दई, पंडित सम्पतिहीन ॥9॥

सरस्वति के भंडार की, बड़ी अपूरब बात।
ज्यों खरचै त्यों-त्यों बढ़ै, बिन खरचै घट जात ॥10॥

छमा खड्ग लीने रहै, खल को कहा बसाय।
अगिन परी तृनरहित थल , आपहिं ते बुझि जाय ॥11॥

बुरौ तऊ लागत भलो, भली ठौर परलीन।
तिय नैननि नीको लगै, काजर जदपि मलीन ॥12॥

जीवन परिचय

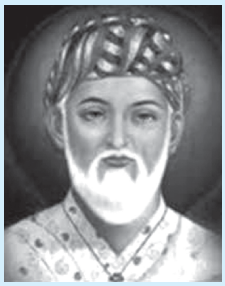

रहीम

रहीम नीति सिद्ध कवि हैं। उनके काव्य में भक्ति, नीति तथा वैराग्य की त्रिवेणी बह रही है। रहीम का पूरा नाम, नवाब अब्दुल रहीम 'खानखाना' था। इनके पिता बैरम खाँ थे जो अकबर के संरक्षक तथा सेनापति थे। रहीम का जन्म सन् 1556 ई. में हुआ था। वे अकबर के प्रधान सेनापति, मंत्री और नवरत्नों में से एक थे । रहीम बड़े दानप्रिय व्यक्ति थे। सन् 1626 ई. में वे परलोक सिधारे। रहीम की कविता का विषय नीति प्रेम है। अनेक सूक्तियों और नीति संबंधी दोहे आज भी मनुष्य जाति का पथ प्रदर्शन करते हैं। तुलसीदास के वे परम मित्र थे।

रहीम सतसई, बरवै नायिका भेद, रास पंचाध्यायी शृंगार सोरठा, मदनाष्टक ,दीवान फारसी, 'वाकयात बाबरी' का फारसी अनुवाद तथा खेट कौतुक, जातकम आपकी रचनाएँ हैं।

रहीम हिन्दी साहित्य की दिव्य विभूति हैं। उनकी वाणी में जो माधुर्य है, वह हिन्दी के बहुत थोड़े कवियों की रचनाओं में मिलता है। वे हिन्दी के ही नहीं फारसी और संस्कृत के भी विद्वान थे। हिन्दी में वे अपने दोहों के लिए प्रसिद्ध हैं।इन दोहों में नीति, ज्ञान,शृंगार और प्रेम का इतना सुन्दर समन्वय हुआ हैं कि मानव हृदय पर उसका बहुत गहरा और स्थायी प्रभाव पड़ता है। रहीम के दोहों के विषय भिन्न-भिन्न हैं- भक्ति ,ज्ञान, वैराग्य,धर्म, नीति, सत्संग, प्रेम, परिहास, स्वाभिमान आदि सभी विषयों पर उन्होंने सफलतापूर्वक अपने भावों को दोहाबद्ध किया है। इस्लामी सभ्यता में पले होने पर भी रहीम की भगवान कृष्ण के प्रति अनन्य भक्ति थी।

रहीम वास्तव में अपने नीति के दोहों के लिए ही हिन्दी भाषा- भाषी जनता में अत्यधिक लोकप्रिय हैं। अपने नीति के दोहों में वह एक

रहीम के दोहे

यों रहीम सुख-दुख सहत, बड़े लोग सह साँति।
उदत चन्द जेहि भाँति सो, अथवत ताही भाँति ॥1 ॥

तरूवर फल नहि खात है, सरवर पियहिं न पान।
कहि रहीम परकाज हित, संपति संचहि सुजान ॥2 ॥

कहि रहीम धन बढ़ि घटे, जात धनिन की बात।
घटै बढ़े उनको कहा घास बेचि जे खात ॥3 ॥

बड़ माया को दोष यह, जो कबहूँ घटि जाय।
तो रहीम मरिबो भलो, दुख सहि जिये बलाय ॥4 ॥

रहिमन याचकता गहे, बड़े छोट ह्वै जाति।
नारायण हू को भयो, बावन आँगुर गात ॥5 ॥

दीन सबन को लखत हैं, दीनहिं लखै न कोय।
जो रहीम दीनहिं लखै, दीनबंधु सम होय ॥6 ॥

जो रहीम ओछो बढ़ै, तो अति ही इतराय।
प्यादे सों फरजी भयो, टेढ़ो-टेढ़ो जाय ॥7 ॥

कौन बड़ाई जलधि मिलि, गंग नाम भौं धीम।
केहि की प्रभुता नहि घटी, पर घर गये रहीम ॥8 ॥

शिक्षक और उपदेशक के रूप में हमारे सामने आते हैं, उन्होंने सरल, सुबोध शब्दों में अपने भाव प्रकट किए हैं। दोहों के अतिरिक्त उन्होंने 'बरवै छंद' को भी अपनाया। वे इस छंद के जन्मदाता हैं। उनकी रचनाओं में अलंकार अपने स्वाभाविक रूप से प्रयुक्त हुए हैं। उपमा, रूपक, और उत्प्रेक्षा के प्रयोग में तो वे दक्ष थे। इनके अतिरिक्त श्लेष और यमक भी उनकी रचनाओं में मिलते हैं। रसों में शांत और श्रृंगार उनके प्रिय हैं।

रहीम की भाषा मुख्यत: अवधी और ब्रजभाषा है। फारसी भाषा के विद्वान होने पर भी उन्होंने अपनी रचनाओं में ब्रज और अवधी की पवित्रता पर कोई आँच नहीं आने दी। अपनी रचनाओं में उन्होंने मुहावरे और लोकोक्तियों का भी प्रयोग किया है।

रहीम ने अपने दोहों से हिन्दी साहित्य का गौरव बढ़ाया है। नीति और सत्संग के दोहों में उन्होंने तुलसी के समान सफलता प्राप्त की। सर्वसाधारण में रहीम के दोहों ने जो पैठ बनाई, वह अन्य दोहों के रचनाकारों ने नहीं। हिन्दी साहित्य जब तक जीवित रहेगा, तब तक रहीम की रचनाएँ हिन्दी भाषा-भाषी का पथ प्रशस्त करती रहेंगी।

दुरदिन परे रहीम कहि भूलत सब पहिचानि ।
सोच नहीं वित हानि को, जो न होय हित हानि ॥9 ॥

रहिमन मनहिं लगाय के, देखि लेहु किन कोय।
नर को बस करिबो कहा, नारायन बस होय ॥10 ॥

भूप गनत लघु गुनिन को, गुनी गनत लघु भूप।
रहिमन गिरि ते भूमि लौं, लखो तो एकै रूप ॥11 ॥

रहिमन विपदा हू भली, जो थोरे दिन होय।
हित-अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय ॥12 ॥

अब रहीम मुश्किल पड़ी ,गाढ़े दोऊ काम।
साँचे से तो जग नहीं, झूठे मिलै न राम ॥ 13 ॥

अभ्यास

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

(1) बिना उपयुक्त अवसर के कही गई बात कैसी लगती है?

(2) ऐसी कौन सी सम्पति है जो व्यय करने पर बढ़ती है?

(3) सुख और दुख को किस प्रकार ग्रहण करना चाहिए?

लघु उत्तरीय प्रश्न

(1) किस उदाहरण के द्वारा कवि ने यह बताया है कि कोई बुरी चीज यदि भले स्थान पर स्थित हो तो भली लगती है?

(2) वृक्ष के माध्यम से कवि क्या संदेश देता है?

(3) रहीम ने 'विपदा' को क्यों भला कहा है?

(4) अच्छे लोग सम्पत्ति का संचय किसलिए करते हैं?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(1) वृन्द के संकलित दोहों के आधार पर उनके 'नीति' संबंधी विचार लिखिए।

(2) वृन्द की किन शिक्षाओं को आप जीवन में अपनाना चाहेंगे?

(3) निम्नलिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए–

अ. कौन बड़ाई जलधि मिलि, गंग नाम भौ धीम।
केहि की प्रभुता नहि घटी, पर घर गये रहीम।

आ. सरस्वति के भण्डार की बड़ी अपूरब बात।
ज्यों खरचै त्यों–त्यों बढ़ै, बिन खरचै घट जात॥

काव्य सौन्दर्य–

1. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम् रूप लिखिए–

सरवर, आंगुर, गुनी, अपूरब, खरचै, ओड़े।

2. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों के अलंकार पहचानिए–

अ. ज्यों खरचै त्यों–त्यों बढ़े, बिन खरचे घट जाय।

आ. दीन सबन को लखत है, दीनहिं लखै न कोय।

इ. कहि रहीम परकाज हित सम्पति संचहि सुजान।

आइए सीखें:–

13 मात्राएँ	11 मात्राएँ
ऽ । ।।। ऽ ।।। ऽ	ऽ ।। । ऽ । ऽ।
दीन सबन को लखत हैं	दीनहि लखै न कोय।
ऽ । ऽ । ऽ ।। । ऽ	ऽ । ऽ । । । ऽ।
जो रहीम दीनहि लखै,	दीनबन्धु सम होय॥

यह दोहा छंद है। यह मात्रिक छंद के अन्तर्गत आता है। इस छंद की रचना मात्राओं की गिनती के आधार पर होती है।

मात्राएँ कैसे गिनते हैं?

मात्रा

किसी स्वर के उच्चारण में जो समय लगता है उसकी अवधि को मात्रा कहते हैं। मात्राएँ–ह्रस्व और दीर्घ होती हैं।

ह्रस्व मात्रा–

अ, इ, उ, ऋ ह्रस्व स्वर की हैं। इसे लघु भी कहते है। इसकी एक मात्रा गिनी जाती है। इसका चिह्न ' ।' है।

दीर्घ मात्रा-

आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ की दीर्घ मात्रा होती है। इसे गुरू भी कहते हैं। इसकी दो मात्राएँ गिनी जाती हैं। इसका संकेत चिह्न ' ऽ ' है।

और भी जानिए-

1. कविता में प्राय: संयुक्त अक्षर से पहले वर्ण को गुरु ऽ माना जाता है। जैसे-दीनबन्धु
2. अनुस्वार से युक्त ह्स्व वर्ण गुरु माना जाता है।

   जैसे बसंत- । ऽ ।
3. विसर्ग युक्त ह्स्व वर्ण गुरु माना जाता है। जैसे-अत: । ऽ
4. किसी शब्द के प्रथम संयुक्ताक्षर में दीर्घ मात्रा हो तो वह गुरु माना जाएगा किन्तु यदि ह्स्व है तो लघु रहेगा

   जैसे- क्लांत ऽ । , स्वर ।।
5. यदि संयुक्त वर्ण के पहले का वर्ण स्वयं गुरु हो उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है जैसे- मान्धाता ऽ ऽ ऽ (यहाँ ' 'मा' गुरु ही रहेगा। संयुक्त का कोई प्रभाव नहीं)
6. चन्द्र बिन्दुवाला अक्षर लघु मात्रा में आता है। जैसे-हँस॥

3. निम्नलिखित छंदो में मात्राएँ गिनकर, छंद की पहचान कीजिए-

   अ. कारज धीरे होतु है, काहे होत अधीर।
   समय पाय तरूवर फलै, केतिक सींचौ नीर॥

   आ. नैना देत बताय सब, हिय को हेत अहेत।
   जैसे निर्मल आरसी, भली बुरी कहि देत॥

पढ़िए और समझिए-

अब न कुछ भी पास मेरे
माँगते हो रूप क्या,
हार बैठा जिन्दगी का
दाँव पहले दाँव में।
मत कुरेदो दर्द होता है, हृदय के घाव में।

इस काव्यांश में सरल और सुबोध शब्द-योजना है। अत: पढ़ते ही इसका अर्थ स्पष्ट हो रहा है। उपर्युक्त काव्यांश में सरल तथा सुबोध शब्दों से अर्थ की अभिव्यंजना होने पर काव्य में 'प्रसाद गुण' की स्थिति बन गई हैं।

4. रहीम के संकलित दोहों में से प्रसाद गुण सम्पन्न दोहे छाँटकर लिखिए।

समझिए-

बैन सुन्या जब ते मधु, तबते सुनत न बैन।

इस पद्यांश में कैसी विडम्बना है? 'बैन सुन्या' और 'सुनतन बैन' में विरोध दिखाई पड़ता है। वस्तुत: सच्चाई यह है कि विरोध का आभास हो रहा है।

जहाँ, किसी कार्य पदार्थ या गुण में वास्तविक विरोध न होते हुए भी विरोध का आभास हो वहाँ विरोधाभास अलंकार होता हैं।

और भी जानिए-

किसुक, गुलाब, कचनार और अनारन की

डारन पै डोलत अंगारन के पुंज है।

यहाँ पलाश, गुलाब, कचनार और अनार की लाल फूलों का प्रतिषेध कर उनमें अंगारन के पुँज की स्थापना की है। और सच्ची बात छिपा ली गई है जहाँ किसी सच्ची बात को छिपाकर उसके स्थान पर किसी झूठी बात या वस्तु की स्थापना की जाए वहाँ अपह्नुति अलंकार होता है।

5. निम्नलिखित काव्यांश में अलंकार पहचानिए –

(क) सुनहू देव रघुवीर कृपाला। बन्धु न होइ मोरि यह काला॥

(ख) या अनुरागी चित्त की गति समझे नहिं कोइ। ज्यों-ज्यों बूढ़ै स्याम रंग, त्यों-त्यों उज्ज्वल होइ।

योग्यता विस्तार

1. नीति और शिक्षा से संबन्धित किसी लघु नाटिका को खोजकर विद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रस्तुत कीजिए।
2. 'विधाता ने मूर्ख को सम्पत्ति दी है और पण्डित को निर्धन बनाया है'। वृन्द के इस कथन पर परिचर्चा आयोजित कीजिए।
3. नीचे लिखे गए दोहों के भावों को लिखिए-

   अ. करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
   रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निसान॥

   आ. रहिमन चुप ह्वै बैठिए, देखि दिनन को फेर।
   जब नीके दिन आइहै, बनत न लागहि बेर॥
4. 'मित्रता', 'सत्संगति', 'परोपकार', 'मीठी बोली' आदि शीर्षकों के अन्तर्गत अन्य दोहों, सूक्तियों आदि का संकलन कीजिए।

शब्दार्थ

सुहात= अच्छा लगता है। **गजमुक्ता**=हाथी के मस्तक से मिलने वाला मोती। **हिय**=हृदय। **हेत** =भलाई। **अहेत**=बुराई। **आरसी**=दर्पण। **माहि**=बीच में। **तिहि**=उससे। **अबोध**=समझ की कमी। **केतिक**=कितना ही। **मोटी बात**=गम्भीर बात। **सेर**= पुराने जमाने का एक तौल। **विधि**-ब्रह्मा। **अविधि** = उल्टे कार्य। **प्रवीन**=चतुर। **अपूरब** =अपूर्व, अनोखी। **बसाय**=वश। **अगिन**=अग्नि। **थल**=जगह। **तऊ**=फिर भी। **नीको**=अच्छा। **जदपि**=यद्यपि। **पे**=पर।

***

'प्रकृति-चित्रण '

कवि परिचय

सेनापति

कविवर सेनापति रीतिकाल के उल्लेखनीय और विशिष्ट कवियों की श्रेणी में आते हैं। हिन्दी काव्य जगत में प्रकृति की अनुपम छटा बिखेरने वाले कवियों में सेनापति का नाम अत्यन्त आदर से लिया जाता है। इनका जन्म सन् 1589 ई. के आसपास अनूपशहर जिला बुलन्दशहर (उत्तर प्रदेश) में अनुमानित है। इनके पिता का नाम गंगाधर दीक्षित था। इनके जीवन और मृत्यु के सम्बन्ध में प्रामाणिक सामग्री उपलब्ध नहीं हैं। कहा जाता है कि सेनापति का निधन सन् 1649 हुआ था।

सेनापति के लिखे हुए दो ग्रन्थ बताये जाते हैं – 'काव्य कल्पद्रुम' और 'कवित्त रत्नाकर'। काव्य कल्पद्रुम अभी तक उपलब्ध नहीं हो पाया। कवित्त रत्नाकर में कुल 394 छन्द उपलब्ध हैं।

सेनापति ने 'कवित्त रत्नाकर' में जीवन के विभिन्न रंग उपस्थित किए हैं। इस ग्रन्थ से यह स्पष्ट होता है कि इनकी रचना रीति परम्परा को ध्यान में रखकर की गई है। सेनापति को सर्वाधिक सफलता ऋतु वर्णन में मिली है । ग्रीष्म और वर्षा का वर्णन अत्यन्त प्रभावशाली है । ग्रीष्म की विविध दशाओं का वर्णन करते हुए कवि ने विशेष रूप से ग्रीष्म पीड़ित पंथी और पक्षी का अद्भुत वर्णन किया है।

सेनापति की कविता में उनकी प्रतिभा फूटी पड़ती है । शब्दों के प्रयोग और भाषा पर सेनापति का असाधारण अधिकार है। उनके वर्णों और शब्दों का ध्वनि-सौन्दर्य मनोहर है। सेनापति अलंकार प्रिय कवि हैं। उनके छन्दों में अलंकारों की भरमार है। सेनापति का प्रिय अलंकार श्लेष है। केशवदास को छोड़कर और कोई कवि सेनापति के समकक्ष नहीं ठहरता। सेनापति का ब्रजभाषा पर पूर्ण अधिकार है। उनकी भाषा परिष्कृत है। उन्होने मनहरण (कवित्त) और घनाक्षरी छन्दों

प्रकृति ने मनुष्य की संवेदनाओं का विस्तार किया है और मनुष्य के भाव-जगत को अपनी उपस्थिति से व्यापक बनाया है। काव्य में प्रकृति को कभी आलंबन और कभी उद्दीपन के रूप में अभिव्यक्त किया गया है। काव्यगत अलंकारों के निर्माण में भी प्रकृति की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। अधिकांश कवियों ने प्रकृति का मानवीकरण करके प्रकृति और मनुष्य के सहवर्ती स्वभाव को ही रेखांकित किया है। हिन्दी के आदिकाल से ही काव्य में प्रकृति सक्रिय रही है। हमारा आदिकाव्य अधिकांशतः प्रकृति से संवेदित है। मध्यकालीन हिन्दी काव्य में प्रकृति का वर्णन षट्ऋतु वर्णन परम्परा तथा बारहमासा वर्णन परम्परा के अंतर्गत किया गया है।

रीतिकाल में कवियों ने प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण किया है। इस युग में प्रकृति की बदलती छवियों का मनोहारी दिग्दर्शन कलात्मक परिवेश में किया गया है। आधुनिक युग में भी प्रकृति के व्यापक सरोकारों को काव्य में कल्पना के विस्तार से परखा गया है। विशेष रूप से छायावादी काव्य के अंतर्गत प्रकृति के मानवीकरण के अनेक संदर्भ प्राप्त होते हैं। प्रकृति को आधुनिक संदर्भों में बदलते जीवन-व्यापारों के क्रम में इस तरह प्रस्तुत किया गया है कि प्रकृति हमारी जड़ होती जा रही संवेदनाओं को उकसाने के लिए बार-बार कविता में उपस्थित हो जाती है।

कविता में प्रकृति हमारी संपूर्ण जीवन पद्धति हमारे पर्यावरण पर ही अवलंबित है। प्रकृति और कविता का जीवन से गहरा संबंध है। इसलिए प्रकृति कविता में सदैव विद्यमान रहेगी। वृक्ष, नदी, पहाड़, समुद्र, चिड़िया, शेर, आकाश और धरती कविता में निरंतर अपने नये-नये आशय लेकर कविता में उपस्थित होते रहेंगे।

रीतिकाल के प्रमुख कवि सेनापति ने षट्ऋतु वर्णन परंपरा में ऋतुओं की बदलती छवियों को अपनी अद्भुत कल्पना-शक्ति के सहारे प्रस्तुत किया है। संकलित कविताओं में उन्होंने बसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, शिशिर के वर्णन में इन ऋतुओं के गुण-धर्म के साथ इन ऋतुओं की प्राकृतिक सुषमा का चित्रण किया है। बसंत की शोभा, ग्रीष्म का ताप, वर्षा में बादल, बिजली और इन्द्रधनुष का सौंदर्य, शरद की विमल

का ही अधिकतर प्रयोग किया है। श्लेष, यमक, अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, रूपक, उपमा, अपन्हुति, अलंकारों का आपने स्पष्टत: प्रयोग किया है।

रीतिकालीन कवियों में प्रचलित परम्परा से हटकर काव्य रचना करने वाले कवियों में सेनापति का विशिष्ट स्थान है। आपका प्रकृति चित्रण तो अप्रतिम है। सेनापति की कविता शब्द चमत्कार तथा उक्ति वैचित्र्य की दृष्टि से अन्य कवियों के बीच सहज ही पहचानी जा सकती है। आपका ऋतु वर्णन हिन्दी साहित्य में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

छवि और शिशिर के छोटे पड़ते दिनों तथा लंबी होती रातों का दृश्य विधान कवि ने विभिन्न अलंकारों के माध्यम से किया है।

आधुनिक युग के प्रमुख छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत को तो प्रकृति का सुकुमार कवि ही कहा जाता है। उनकी कविता नौका विहार उनकी प्रकृति परक कविताओं में से एक श्रेष्ठ कविता है। इस कविता में कवि ने चाँदनी रात्रि में गंगा के सौंदर्य का चमत्कारी चित्रण किया है। गंगा के बदलते रूपों का वर्णन कवि ने कल्पना का आश्रय लेकर किया है। किनारों में लिपटी गंगा की धार और उसके रेतीले विस्तार के साथ-साथ जल पर तैरती नौका का अनेक उपमाओं के माध्यम से कविता में सुंदर वर्णन हुआ है। कविता के अंत में कवि ने जीवन की शाश्वत गतिशीलता और दार्शनिकता को व्यक्त किया है।

ऋतु वर्णन

बरन बरन तरु फूले उपवन बन
सोई चतुरंग संग दल लहियत है।
बंदी जिमि बोलत बिरद बीर कोकिल हैं,
गुंजत मधुप गान गुन गहियत है॥
आवै आस-पास पुहुपन की सुबास सोई
सौंधे के सुगंध माँझ सने रहियत है।
सोभा कौ समाज, सेनापति सुख-साज, आज
आवत बसंत रितुराज कहियत है॥ 1॥

वृष कौ तरनि तेज सहसौ किरन करि,
ज्वालन के जाल बिकराल बरसत हैं।
तचति धरनि, जग जरत झरनि, सीरी
छाँह कौ पकरि पंथी-पंछी बिरमत हैं॥
सेनापति नैंक दुपहरी के ढरत, होत
धमका विषम, ज्यौं न पात खरकत है।
मेरे जान पौनों सीरी ठौर कौं पकरि कौंनो,
घरी एक बैठि कहूँ घामै बितवत है॥ 2॥

दामिनी दमक, सुरचाप की चमक, स्याम
घटा की झमक अतिघोर घनघोर तैं।
कोकिला, कलापी, कल कूजत हैं जित-तित
सीतल है हीतल, समीर झकझोर तैं।।
'सेनापति' आवन कह्यो हैं मनभावन, सु
लाग्यो तरसावन विरह जुर जोर तैं
आयो सखी सावन, मदन सरसावन
लाग्यो है बरसावन सलिल चहुँ ओर तैं॥ 3॥

पाउस निकास तातैं पायो अवकास, भयो
जोन्ह कौं प्रकास, सोभा ससि रमनीय कौं।
बिमल अकास, होत वारिज विकास, सेना-
पति फूले कास, हित हंसन के हीय कौ।।
छिति न गरद, मानौ रँगे है हरद सालि
सोहत जरद, को मिलावै हरि पीय कौं
मत्त हैं दुरद, मिट्यौ खंजन-दरद,रितु
आई है सरद सुखदाई सब जीय कौं॥ 4॥

सिसिर मे ससि कौ, सरूप पावै सबिताऊ।
घाम हूँ में चाँदनी की दुति दमकति है।
सेनापति होत सीतलता है सहस गुनी,
रजनी की झांईं, वासर में झलकति है।।
चाहत चकोर, सूर ओर दृग छोर करि,
चकवा की छाती तजि धीर धसकति है।
चंद के भरम होत मोद है कुमोदनी को,
ससि संक पंकजिनी फूलि न सकति है॥ 5॥

कवि परिचय

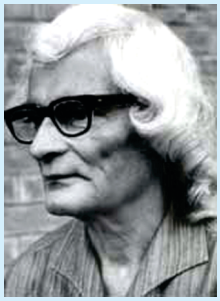

सुमित्रानंदन पंत

आधुनिक काव्य धारा को प्राचीन रूढ़ियों से मुक्त कर नवीन दिशा की ओर मोड़ने तथा खड़ी बोली को रमणीय रूप प्रदान करने में पन्त जी का विशेष योगदान है। सुकुमार भावनाओं के कवि पन्तजी का जन्म सन् 1900 ई. को अल्मोड़ा (उत्तरांचल)के निकट कौसानी नामक ग्राम में हुआ था। आपके पिता का नाम पं. गंगाधर पन्त था। जन्म के कुछ समय बाद ही आपकी माता का निधन हो गया। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा कौसानी और अल्मोड़ा में हुई। गांधीजी के असहयोग आन्दोलन से जुड़े। सन् 1950 में आप आकाशवाणी से सम्बद्ध हुए। रेडियो को यह नाम आपकी ही देन है। पंतजी को साहित्य अकादमी और ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ है। भारत सरकार ने आपको 'पद्मभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया है। 29 दिसम्बर सन् 1977 को प्रकृति के गीत गाने वाला यह गायक हमारे बीच से उठ गया।

पन्तजी की प्रमुख रचनाएँ है- वीणा, ग्रंथि, पल्लव, गुंजन, युगान्त, युगवाणी, ग्राम्या, स्वर्ण किरण, स्वर्ण धूलि, उत्तरा, अतिमा, कला और बूढ़ा चांद, लोकायतन, चिदम्बरा और वाणी । इसके अतिरिक्त इन्होंने तीन गीति नाट्य - ज्योत्सना, रजत शिखर तथा अतिमा, उपन्यास 'हार' तथा कहानी संग्रह 'पाँच कहानियाँ' भी प्रकाशित हैं।

पन्तजी हिन्दी की नई काव्य धारा के जागरूक कवि और कलाकार है। प्रकृति सुन्दरी की गोद में जन्म लेने तथा विद्यार्थी जीवन में अंग्रेजी कवि शैली, कीट्स, वर्ड्सवर्थ की स्वच्छन्द प्रवृत्तियों से अत्यधिक प्रभावित होने के कारण वे नई दिशा में अग्रसर हुए। वे प्रकृति और जीवन की कोमलतम विविध भावनाओं के कवि है। प्रकृति की प्रत्येक छवि को, जीवन के प्रत्येक रूप को उन्होंने आत्मविभोर और तन्मय होकर देखा है। उनके काव्य में दो धाराओं

नौका विहार

शांत, स्निग्ध, ज्योत्स्ना, उज्ज्वल।
अपलक अनंत, नीरव भूतल।
सैकत शैया पर दुग्ध धवल, तन्वंगी गंगा, ग्रीष्म विरल
लेटी हैं श्रांत, क्लांत, निश्चल
तापस बाला गंगा निर्मल, शशि, मुख से दीपित मृदु करतल,
लहरे उर पर कोमल कुंतल।
गोरे अंगों पर सिहर-सिहर लहराता तार तरल सुंदर,
चंचल अंचल सा नीलांबर
साड़ी की सिकुड़न-सी जिस पर, शशि की रेशमा विभा से भर,
सिमटी है वर्तुल, मृदुल लहर, चाँदनी रात का प्रथम प्रहर,
हम चले नाव लेकर सत्वर
सिकता की सस्मित सीपी पर, मोती की ज्योत्सना रही विचर,
लो, पालें चढ़ी, उठा लंगर
मृदु मंद-मंद मंथर-मंथर, लघु तरणि हंसनि-सी सुंदर,
तिर रही खोल पालों के पर
निश्चल जल के शुचि दर्पण पर, बिंबित हो रजत पुलिन निर्भर,
दुहरे ऊँचे लगते क्षण भर
कालाकांकर का राजभवन, सोया जल में निश्चिंत प्रमन,
पलकों पर वैभव स्वप्न सघन, नौका में उठती जल-हिलोर,
हिल पड़ते नभ के ओर-छोर
विस्फारित नयनों से निश्चल, कुछ खोज रहे चल तारक दल,
ज्योतित कर नभ का अंतस्तल, जिनके लघु दीपों को चंचल,
अंचल की ओट किए अविरल,
फिरती लहरें लुक-छिप पल-पल।
सामने शुक्र की छवि झलमल, तैरती परी-सी जल में कल,
रुपहरे कचों में हो ओझल।
लहरों कें घूंघट से झुक-झुक, दशमी का शशि निज तिर्यकमुख,
दिखलाता, मुग्धा-सा रुक-रुक।

का समावेश हो गया है- एक में उनके कवि हृदय का स्पन्दन है दूसरी में विश्व जीवन की धड़कन। पन्तजी मुख्यत: दृश्य जगत के कवि है। पहले वे प्राकृतिक सौन्दर्य के कवि थे, बाद में वे जीवन - सौन्दर्य कवि के रूप में बदल गये । पन्तजी विश्व में ऐसा समाज चाहते हैं जो कि एक-दूसरे के सुख-दुख बाँट सके।

जग पीड़ित रे अति दुःख से, जग पीड़ित रे अति सुख से
मानव जग में बट जाये, दुःख-सुख से और सुख-दुःख से ।।

इनकी छायावादी कविताएँ अत्यन्त कोमल एवं मृदुल भावों को अभिव्यक्त करती हैं। इन्ही कारणों से पन्तजी को 'प्रकृति की कोमल भावनाओं का सुकुमार कवि ' कहा जाता है।

पन्तजी की रचनाओं का भाव जगत जैसे-जैसे बदलता गया है, इनकी काव्य कला में दृष्टि भी परिवर्तित होती रही है। पन्तजी की भाषा कोमलकान्त पदावली से युक्त सहज खड़ी बोली है। पन्तजी की भाषा संस्कृत निष्ठ और परिमार्जित है,जिसमें एक सहज प्रवाह देखने को मिलता है। पन्तजी की शैली में छायावादी काव्य शैली की समस्त विशेषताएँ यथा- लाक्षणिकता, प्रतीकात्मकता, ध्वन्यात्मकता, चित्रात्मकता, सजीव और मनोरम बिम्ब-विधान आदि प्रचुर मात्रा में मिलती है। पन्तजी के काव्य में कल्पना ही कविता का मेरूदण्ड है। इनका प्रिय रस श्रृंगार है परन्तु इनकी रचनाओं में शान्त, अद्भुत, करुण, रौद्र, आदि रसों का भी सुन्दर परिपाक हुआ है। इन्होंने नवीन छन्दों का प्रयोग कियाहै। पन्तजी का मत है कि मुक्तक छन्दों की अपेक्षा तुकान्त छन्दों के आधार पर ही काव्य -संगीत की रचना हो सकती है। उपमा, रुपक, उत्प्रेक्षा,अन्योक्ति आदि अलंकार इन्हे विशेष प्रिय हैं। इन्होंने मानवीकरण और ध्वन्यार्थ व्यंजना जैसे पाश्चात्य अलंकारो के भी प्रयोग किये हैं।

हिन्दी के आधुनिक कवियों में पन्तजी का महत्वपूर्ण स्थान है। खड़ी बोली की काव्य भाषा में कोमलकान्त पदावली का प्रयोग करने वाले पन्तजी अनन्य कवि हैं। छायावाद के प्रमुख कवियों - प्रसाद,पन्त,निराला की त्रयी में पन्तजी का महत्वपूर्ण स्थान है। पन्तजी को छायावाद का स्तम्भ और प्रकृति का सुकुमार कवि माना जाता है। पन्तजी के अनुसार-

वियोगी होगा पहला कवि,आह से उपजा होगा गान।
उमड़कर नयनों से चुपचाप, बही होगी कविता अनजान।।

अब पहुँची चपला बीच धार, छिप गया चाँदनी का कगार।
दो बाहों से दूरस्थ तीर, धारा का कृश कोमल शरीर।
आलिंगन करने को अधीर।
अति दूर क्षितिज पर विटप-भाल, लगती भू-रेखा सी अराल,
अपलक-नभ नील-नयन विशाल,
माँ के उर पर शिशु-सा, समीप, सोया धारा में एक द्वीप,
उर्मिल प्रवाह को कर प्रतीप,
वह कौन विहग? क्या विकल कोक, उड़ता हरने निज विरल शोक?
छाया की कोकी को विलोक।
पतवार घुमा अब प्रतनु भार। नौका घूमी विपरीत धार।
डांडों के चल करतल पसार, भर-भर मुक्ताफल फेन स्फार,
बिखराती जल में तार हार।
चाँदी के साँपों की रलमल, नाचती रश्मियाँ जल में चल,
रेखाओं सी खिंच तरल-तरल।
लहरों की लतिकाओं में खिल, सौ-सौ शशि, उड़े झिलमिल।
फैले-फूले जल में फेनिल।
अब उथला सरिता का प्रवाह, लग्गी से ले-ले सहज थाह।
हम बढ़े घाट को सहोत्साह!
ज्यों-ज्यों लगती है नाव पार, उर में आलोकित शत विचार
इस धारा-सा ही जग का क्रम,
शाश्वत इस जीवन का उद्गम,
शाश्वत है गति, शाश्वत संगम
शाश्वत नभ का नीला विकास,
शाश्वत शशि का यह रजत हास
शाश्वत लघु लहरों का विलास
हे जग-जीवन के कर्णधार!
चिर जन्म-मरण के आर-पार शाश्वत जीवन नौका विहार,
मैं भूल गया अस्तित्व-ज्ञान, जीवन का यह शाश्वत प्रमाण,
करता मुझको अमरत्व दान।

अभ्यास

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(1) खंजन पक्षी का दु:ख किस ऋतु में मिट जाता है?

(2) किस ऋतु में सूर्य चन्द्रमा के समान दिखाई देता है?

(3) नौका विहार कविता में किसकी तुलना चाँदी के साँपों से की है?

लघु उत्तरीय प्रश्न

(1) सेनापति के अनुसार वर्षा ऋतु में प्रकृति में क्या-क्या परिवर्तन दिखाई देने लगते हैं?

(2) गंगाजल में प्रतिबिम्बित चन्द्रमा के लिए कवि ने क्या कल्पना की है?

(3) गंगा की धार के मध्य स्थित द्वीप कवि को कैसा दिखाई देता है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(1) सेनापति ने बसंत को ऋतुराज क्यों कहा है?

(2) सेनापति ने ग्रीष्म की प्रचण्डता का वर्णन किस प्रकार किया है?

(3) तापस बाला के रूप में विश्राम कर रही गंगा के सौन्दर्य का वर्णन कवि ने किस प्रकार किया है?

(4) रात्रि के प्रथम प्रहर की चाँदनी में नदी, तट व नाव का सौन्दर्य क्यों बढ़ गया है? स्पष्ट कीजिए।

(5) कवि ने नौका विहार की तुलना जीवन के शाश्वत रूप से किस प्रकार की है?

(6) निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए-

(1) चाहत चकोर ..... सकति है।

(2) मेरे जान पौनो .....बितवत है।

(3) मृदु मंद-मंद ..... क्षण भर।

(4) माँ के उर पर ..... विपरीत धार।

काव्य सौन्दर्य-

1. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए-

   बरन, पंछी, सोभा, सहसौ, पौनों, पाउस, सांप, चाँदी, बरसा

2. निम्निलिखित पंक्तियों के सामने अलंकारों के कुछ विकल्प दिए गए हैं। सही विकल्प छाँटकर लिखिए-

   (अ) बरन-बरन तरु फूले उपवन बन

   (उपमा/यमक/अनुप्रास)

   (आ) मेरे जान पौनों सीरी ठौर कौं पकरि कौंनो

   घरी एक बैठि कहूँ धामे बितवत है।(उत्प्रेक्षा/रूपक/उपमा)

   (इ) माँ के उर पर शिशु-सा, समीप सोया धारा में एक द्वीप

   (उत्प्रेक्षा/रूपक/उपमा)

आइए जानें-

(1) किंशुक कुसुम समझकर झपटा, भौंरा शुक की लाल चोंच पर।

तोते ने निज ठौर चलाई, जामुन का फल उसे समझकर॥

(2) लक्ष्मी थी या दुर्गा थी या स्वयं वीरता का अवतार।

यहाँ पहले उदाहरण में भ्रमर को तोते की चोंच में किंशुक कुसुम होने का भ्रम हो गया है तथा तोते को भ्रमर में जामुन फल का भ्रम हो गया है।

दूसरे उदाहरण में अनिश्चयात्मक स्थिति है- कवि सोच ही नहीं पा रहा कि वह लक्ष्मी है या रणचण्डी दुर्गा अथवा वीरता की अवतार। यहाँ साहस मूलक संशय बना हुआ है।

समझिए-

जहाँ भ्रम वश किसी वस्तु को सादृश्य के कारण अन्य वस्तु समझ लिया जाए । समानता के भ्रम से निश्चयात्मक स्थिति होने पर भ्रान्तिमान अलंकार होता है। किन्तु जहाँ किसी वस्तु में उसी के समान वस्तु का संशय हो जाए और अनिश्चय बना रहे तो वहाँ सन्देह अलंकार होता है। उपर्युक्त प्रथम उदाहरण में भ्रान्तिमान और द्वितीय उदाहरण में सन्देह अलंकार है।

3. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार पहचानकर लिखिए-

(क) चंद के भरम होत मोद है कुमोदनी को

(ख) ससि संक पंकजिनी फूलि न सकति है।

मेरे जान पौनो सीरी ठोर कौं पकरि कौंनो।

घरी एक बैठि कहूं घमै वितवत हैं।

पढ़िए-काव्यांश में प्रकृति का मानवीकरण किया है। इसमें कवि प्राय: प्राकृतिक वस्तुओं पर मानवीय भावनाओं, क्रिया कलापों का आरोप करते हैं।

4. कविवर पंत के संकलित अंश से मानवीकरण के कुछ उदाहरण छाँटकर लिखिए।

5. निम्नलिखित पंक्तियों में शब्द गुण पहचान कर लिखिए-

अ. गुंजत मधुप गान गुन गहियत है

आवै आस-पास पुहुपन की सुबास सोई

सौंधे के सुगंध माँझ सने रहियत है।

आ. मेरे जान पौनों सीरी ठौर कौ पकरि कौंनों,

घरी एक बैठि कहूं घामै बितवत है।

जानिए-

मृदु मंद-मंद मंथर-मंथर, लघु तरणि, हंसनी सी सुन्दर-पंक्ति में कथन को सौन्दर्य प्रदान करने के लिए एक ही शब्द की आवृति (मंद-मंद और मंथर-मंथर) की गई है।

काव्य में कथन सौन्दर्य के लिए एक ही शब्द की आवृति को पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार कहते हैं।

6. इस पाठ से पुनरुक्तिप्रकाश के उदाहरण छाँटकर लिखिए।

7. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए –

(अ) बरन बरन तरू फूले उपवन वन, सोई चतुरंग संग दल लहियत है।

(आ) सैकत शैया पर दुग्ध धवल, तन्वगी गंगा ग्रीष्म विरल, लेटी है श्रांत, क्लांत निश्चल

(इ) विमल अकास, होत वारिज विकास, सेनापति फूले कास, हित हंसन के हीय को

8. आवन कह्यो है मनभावन सु, लाग्यो तरसावन विरह जुर जोर तैं .....में कौन सा रस है?

योग्यता विस्तार

1. अपने विद्यालय के पुस्तकालय से अन्य कवियों की प्रकृति वर्णन से संबंधित कविताएँ छाँटिए। उन्हें कवियों के कालक्रम के अनुसार लिखिए।

2. किसी प्राकृतिक स्थल का भ्रमण करने हेतु अपने सहयोगियों के साथ मिलकर एक योजना बनाइए।

3. विभिन्न ऋतुओं में से आपको कौन-सी ऋतु सबसे अच्छी लगती है? कारण सहित लिखिए।

4. प्रकृति वर्णन से सम्बंधित कोई एक कविता स्वयं बनाइए।

शब्दार्थ

प्रकृतिवर्णन

(1) **बरन-बरन**= अनेक रंगों के । **सोई**-वहीं। **चतुरंग**=चतुरंगिनी सेना, (हाथी, घोड़ा, रथ, पैदल)। **वन्दीभाट**=कवि। **जिमि**= जैसे। **विरुद**=विरुदावली, प्रशंसागीत, **पहुपन**=पुष्पों की। **माझ**=बीच।

(2) **वृष को तरनि**= वृषभ राशि पर स्थित सूर्य। **सहसौं**=हजारों। **तचति**=गर्म हो जाती है। **सीरी**= ठंडी। **बिरमत**=विश्राम। **नेक**=थोड़ी। **धमका**=सन्नाटा। **पौनो**= हवा भी। **ठौर**= स्थान।

(3) **दामिनी**= बिजली। **सुरचाप**=इन्द्रधनुष। **कलापी**=मोर **शीतल है हीतल समीर झकझोरतै**= वायु के झोंकों के कारण पसीनें की बूंदे-शीतल करती है। **मदन**= कामदेव।

(4) **पाउस**= पावस, वर्षाऋतु। **जोन्ह**- चाँदनी। **वारिज**=कमल। **कमनीय**= सुन्दर। **कास**= एक प्रकार की सफेद फूलों वाली घास। **छिति**=पृथ्वी। **गरद**=धूल। **हरद**= हल्दी। **जरद**=पीला। **दुरद**= द्विरद (हाथी), **मिट्यों खंजन दरद**= खंजनपक्षी का दुख दूर हुआ (गर्मी में त्रस्त होकर पहाड़ों पर जाता है व शरद ऋतु में लौट आता है।)

(5) **सिसिर**= शीत ऋतु। **सविताऊ**= सूर्य भी। **दुति**= चमक। **बासर**= दिन। **सूर**= सूर्य। **चकवा** =एक पक्षी जिसका जोड़ा रात में अलग रहकर दिन में मिलता है, शीत की लम्बी रात व सूर्य की शीतलता कष्टदायी है।

नौका विहार-

ज्योत्स्ना= चाँदनी रात। **अपलक**= बिना पलक झुकाए। **सैकत**= रेतीली। **धवल**= श्वेत। **तन्वंगी**=दुबली पतली। **श्रांत**=शान्त। **क्लान्त**=थकी हुई। **कुंतल** =बाल । **वर्तुल**=टेड़ी-मेड़ी,घुमावदार। **सत्वर**=शीघ्र। **सिकता**=बालू। **पुलिन**=किनारा। **तारकदल**=तारों का समूह। **तिर्यक मुख**= टेढ़ा मुँह। **शाश्वत**= सदा रहने वाला।

***

'शौर्य और देश प्रेम'

कवि परिचय

भूषण

वीर रस के कवियों में भूषण का स्थान सर्वोपरि है। 'वीर' रस को प्रतिष्ठित करने का श्रेय भूषण को ही है। उनका ओजस्वी व्यक्तित्व स्वाभिमान,निर्भीकता,जातीय गौरव एवं अन्याय के विरूद्ध विद्रोह की भावना से भरा हुआ था। उन्होने भारतीय संस्कृति के महान रक्षक शिवाजी और छत्रसाल की वीरता का ओजस्वी वर्णन करके हिन्दी कविता की श्री वृद्धि की।

भूषण कानपुर जिले के तिकवापुर गाँव के निवासी रत्नाकर त्रिपाठी के पुत्र थे । यद्यपि भूषण के जन्म विषय में विद्वानों में मतभेद है, किन्तु आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार इनका जन्म सन् 1613 ई० में मान्य है। प्रसिद्ध कवि चिन्तामणि और मतिराम इनके भाई कहे जाते हैं। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने खोज की है कि इनका नाम घनश्याम था। भूषण की उपाधि चित्रकूट के राजा रूद्र सोलंकी से मिली,परन्तु अब इनका नाम भूषण ही काव्य जगत में प्रसिद्ध है। कहते हैं महाराज छत्रसाल ने इन्हें सम्मान देने के लिए उनकी पालकी में कंधा लगाया था। तभी भूषण ने कहा था- 'सिवा को बखानो के बखानों छत्रसाल कौ ।' इनका निधन सन् 1715 ई. माना गया है।

भूषण द्वारा लिखित चार ग्रन्थ बताए जाते हैं -शिवराज भूषण, शिवाबावनी, छत्रसाल दशक, भूषण हजारा (भूषण उल्लास)

भूषण की मूल प्रवृत्ति वीर रस की थी। वीर रस से सम्बन्धित विभिन्न भावों और सन्दर्भों का समावेश भूषण की कविता में सहज रूप से देखा जा सकता है । वीर रस के अतिरिक्त उनकी कविता में रौद्र,वीभत्स,और भयानक रसों का भी समावेश हुआ है। इससे सिद्ध होता है कि भूषण रससिद्ध कवि थे। उन्होंने रीतिकालीन श्रृंगारिकता की दिशा मोड़ दी । भूषण की रचनाओं का राष्ट्रीय महत्व है। उनके लिए शिवाजी का

अपने देश की सांस्कृतिक चेतना, भौतिक संरचना और उसके गौरवशाली इतिहास के प्रति भावनात्मक लगाव जैसे संदर्भ ही हमारे देश-प्रेम को उजागर करने वाले आधार तथ्य हैं। मातृभूमि के निमित्त रची कविता न केवल देशवासियों के मन में साहस और शौर्य का संचार करती है अपितु ऐसी कविता देश-प्रेम के वीरतापरक भाव की अनुगामिनी भी बनती है। वीरता का यह भाव व्यक्ति की चारित्रिक दृढ़ता से ही फूटता है। उसकी यही चारित्रिक दृढ़ता समाज और राष्ट्र में व्याप्त विसंगतियों को दूर करने के लिए कविता को शौर्यपूर्ण ललकार में बदल देती है। हिन्दी काव्य इतिहास में संपूर्ण आदिकाल वीरता की ऐसी ही भावनाओं से परिपूर्ण है। अनेक राष्ट्र नायकों के चरित्र की वीरता का बखान इस युग की कविता में किया गया है। इस आधार पर इसे वीरगाथा काल भी कहा जाता है। रीतिकाल में कवियो ंने अपने आश्रयदाता की वीरता को केंद्र बनाकर काव्य रचा है, रीतिकाल का ओजस्वी स्रोत सर्वाधिक रूप से महाकवि भूषण के काव्य में उमड़ पड़ा है। आधुनिक युग में मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, रामधारी सिंह 'दिनकर' और श्रीकृष्ण 'सरल' जैसे कवियों में मुखरित हुआ है।

भूषण के काव्य में वीर रस साकार हो उठा है। उनकी वीर रस से ओतप्रोत कविताएँ रीतिकाल के परिदृश्य में अपनी अलग पहचान बनाती हैं। उन्होंने अपनी कविता के लिए शिवाजी और छत्रसाल जैसे नायकों का चयन किया। इन दोनों वीर पुरुषों के हृदय में अपनी मातृभूमि के प्रति अडिग प्रेम था। इसी प्रेम को आधार मानकर भूषण ने इन नायकों के शौर्य का वर्णन अपनी ओजपूर्ण वाणी में किया है। प्रस्तुत छंदों में कवि ने अनेक उत्प्रेक्षाओं के माध्यम से शिवाजी के शौर्य का वर्णन करते हुए उन्हें अनेक तेजस्वी विभूतियों की कोटि में परिगणित किया है। शौर्य का वर्णन करते हुए भूषण ने शिवाजी की युद्ध क्षमता का उल्लेख करते हुए स्पष्ट किया है कि दिल्ली पति औरंगजेब के साथ-साथ अंग्रेज और अनीति में रत आम राजा उनसे भयभीत थे। शिवाजी की वीरता के भय से भयभीत रनिवास में रहने वाली स्त्रियाँ भी जंगल-जंगल भटकने के लिए बाध्य हो उठती थीं। उन्होंने छत्रसाल की बरछी का भी वर्णन करते हुए स्पष्ट किया है कि दुष्टजनों को घायल करने की अद्भुत शक्ति उनकी बरछी में है। भावनाओं के अनुरूप शब्दों का चयन

वही महत्व था जो तुलसी के लिए राम और सूर के लिए कृष्ण का था । भूषण की रचनाओं में हमें प्रचुर मात्रा में ऐतिहासिक सामग्री मिल जाती है। शिवाजी और छत्रसाल का शौर्य वर्णन उनके काव्य का मुख्य विषय है। शिवाजी की युद्ध वीरता, दानशीलता, दयालुता, धर्मवीरता आदि का सजीव वर्णन ओजस्वी वाणी में इन्होंने किया है। इसी कारण भूषण वीर रस के प्रथम कोटि के कवि माने जाते हैं।

भूषण की भाषा ब्रजभाषा है। उन्होंने अरबी, फारसी के शब्दों का बहुतायत से प्रयोग किया है। शब्दों को तुक मिलाने या प्रभाव पैदा करने के लिये तोड़ा-मरोड़ा भी खूब है। अनेक स्थलों पर व्याकरण के नियमों की भी परवाह नहीं की है, फिर भी वीर भावनाओं को व्यक्त करने की उनमें अद्‌भुत क्षमता है। भूषण का काव्य वीर रस का पर्याय बन गया है। भूषण की शैली वीरोचित है। इन्होंने मनहरण ,छप्पय,टोला, उल्लाला, सवैया,गीतिका आदि छन्दों का प्रयोग किया है। उनकी रचनाओं में अवधी ,अपभ्रंश और प्राकृत शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। लोकोक्तियों और मुहावरों का भी भूषण ने कुशलता से प्रयोग किया है।

भूषण हिन्दी के प्रथम राष्ट्रवादी कवि हैं। उस युग में जब राष्ट्र का वर्तमान स्वरूप नहीं था, तब तत्कालीन समाज के लिये भूषण की रचनाओं का राष्ट्रीय महत्व था। भूषण ने अपनी रचनाओं में अकबर की प्रशंसा की है तथा औरंगजेब की कट्टरतापूर्ण नीति और अत्याचारों की आलोचना की है। भूषण का रीतिकालीन साहित्य में वही स्थान है जो राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में मैथिलीशरण गुप्त, सोहनलाल द्विवेदी और दिनकर का है। भूषण का हिन्दी साहित्य में इसलिए भी महत्व है कि उन्होने रीतिकालीन श्रृंगारिक साहित्य को धता बताकर खोए हुए राष्ट्र को जागृति का संदेश दिया। अत: भूषण नि:संदेह माँ भारती के भव्य भूषण के सिरमौर हैं।

और उनका संयोजन मूल्य की अभिव्यक्ति की विशेषता है।

'रामधारी सिंह दिनकर' राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत कवि हैं। उन्होंने भारतीय संस्कृति के स्वर्णिम पृष्ठों की उजास को अपनी कविता में अपने युग की प्रकाश चेतना का नया वलय प्रदान किया है। यहाँ संकलित कविता में वे देश के गौरवशाली अतीत की तुलना में वर्तमान कालीन परिदृश्य को प्रस्तुत करते हुए निराशा में डूब जाते हैं। देश के गौरवपूर्ण सांस्कृतिक स्थलों और देश के लिए मर मिटने वाले देश-प्रेमियों की उत्सर्ग स्थलियों का स्मरण करते हुए वे वर्तमान में उनकी उपेक्षा के कारण विषादमग्न हो उठते हैं।

विज्ञान के आविष्कार मानवीय हित रक्षा से विमुख होकर जीवन के अभिशाप बन रहे हैं। समाज में व्याप्त शोषण का आगामी सिलसिला मानवता को पद दलित कर रहा है। इस तरह की वैषम्य पूर्ण दुखद स्थितियों को समझकर मानवता के प्रति नयी आस्था को प्रकट करने के लिए कवि, कविता में आह्वान करते हैं। और कहते हैं कि क्रांति धात्रि कविता कलुष से भरे इस युग को तू अपने प्रकाश से नयी ऊर्जा दे, नया विधान दे।

शौर्य वर्णन

इन्द्र जिमि जम्भ पर बाड़व सुअम्भ पर
रावन सदम्भ पर रघुकुल राज है।
पौन वारिवाह पर सम्भु रनिनाह पर
ज्यों सहस्त्रबाहु पर राम द्विजराज हैं
दावा द्रुम दंड पर चीता मृगझुण्ड पर,
भूषण वितुण्ड पर जैसे मृगराज हैं।
तेज तम अंस पर कान्ह जिमि कंस पर
त्यौं मलिच्छ बंस पर सेर सिवराज हैं॥ 1॥

चकित चकता चौंकि-चौंकि उठै
बार-बार दिल्ली दहसति चितै चाह करसति है।
बिलखि बदन बिलखात बिजैपुर पति
फिरत फिरंगिन की नारी फरकति है॥
थर थर काँपत कुतुबशाह गोलकुण्डा
हहरि हबस-भूप भीर भरकति है।
राजा सिवराज के नगारन की धाक
सुनि कैते बादसाहन की छाती दरकति है॥ 2॥

ऊँचे घोर मन्दिर के अन्दर रहनवारी
ऊँचे घोर मंदिर के अन्दर रहाती हैं।
कन्दमूल भोग करें कन्दमूल भोग करैं
तीन बेर खाती सो तो तीन बेर खाती हैं।
भूषन सिथिल अंग भूखन सिथिल अंग
बिजन डुलाती ते वे बिजन डुलाती हैं।
भूषन भनत सिवराज वीर तेरे त्रास
नगन जड़ाती ते वै नगन जड़ाती हैं।। 3॥

भुज भुजगेस की बैसंगिनी भुजंगिनी सी,
खेदि-खेदि खाती दीह दारून दलन के।
बखतर-पाखरन बीच धँसि जाति मीन,
पैरि पार जात परवाह ज्यों जलन के।
रैयाराव चंपति के छत्रसाल महाराज,
भूषन सकै करि बखान को बलन के।
पच्छी परछीने ऐसे परे पर छीने बीर,
तेरी बरछी ने बर छीने हैं खलन के।। 4॥

कवि परिचय

रामधारी सिंह 'दिनकर'

दिनकर हिन्दी साहित्य के ओज और पौरुष के कवि माने जाते हैं। आधुनिक काव्य के ओजस्वी कवि, राष्ट्रकवि के नाम से विख्यात रामधारी सिंह दिनकर का जन्म 23 सितम्बर सन् 1908 को बिहार के मुंगेर जिले के सिमरिया नामक गाँव में हुआ था। कविता लिखने में दिनकर की रुचि बचपन से ही थी। पं. रामनरेश त्रिपाठी की 'पथिक' और मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत भारती' रचनाओं का दिनकर पर काफी प्रभाव पड़ा। बाद में सन् 1921 के आंदोलन का भी प्रभाव पड़ा। 1950 में वे मुजफ्फरपुर कॉलेज के हिन्दी विभागाध्यक्ष बने और 1952 में इन्हें राज्य सभा का सदस्य मनोनीत किया गया। सन् 1931 में इनका बहुचर्चित काव्य 'उर्वशी' प्रकाशित हुआ और इसी रचना पर इन्हें सन् 1972 में ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। 24 अप्रैल सन् 1974 ई. को हिन्दी काव्य गगन का यह दिनकर हमेशा के लिये अस्त हो गया। दिनकर जी प्रारंभ से ही लोक के प्रति निष्ठावान, सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति सजग और जन साधारण के प्रति समर्पित कवि थे। इनकी कविता पर राष्ट्रीयता की छाप सबसे अधिक हैं।

दिनकर ने काव्य और गद्य दोनों ही क्षेत्रों में सशक्त साहित्य का सृजन किया है। उनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं:-

काव्य संग्रह:- 'रेणुका हुंकार' 'रसवन्ती' 'द्वन्द्वगीत' 'धूप-छाँव' 'साम धेनी' 'कुरूक्षेत्र' 'रश्मिरथी' 'उर्वशी' 'परशुराम की प्रतीक्षा' 'बापू' मगध की महिमा आदि।

गद्य:- मिट्टी की ओर, अर्धनारीश्वर, संस्कृति के चार अध्याय।

दिनकरजी हिन्दी के क्रान्तिदर्शी कवि

कविता का आह्वान

क्रांतिधात्रि! कविते जाग उठ आडम्बर में आग लगा दे।
पतन पाप पाखण्ड जलें, जग में ऐसी ज्वाला सुलगा दे।

विद्युत की इस चकाचौंध में देख, दीप की लौ रोती है।
अरी! हृदय को थाम महल के लिए झोपड़ी बलि होती है।

देख कलेजा फाड़ कृषक, दे रहे हृदय शोणित की धारें।
और उठी जातीं उन पर ही वैभव की ऊँची दीवारें।

बन पिशाच के कृषक मेघ में नाच रही पशुता मतवाली।
आगन्तुक पीते जाते हैं, दीनों के शोणित की प्याली।

उठ भूषण की भाव रंगिणी! रूसो के दिल की चिनगारी।
लेनिन के जीवन की ज्वाला जाग जागरी क्रांतिकुमारी।

लाखों क्रोंच कराह रहे हैं जाग आदि कवि की कल्याणी।
फूट-फूट तू कवि कंठों से, बन व्यापक निज युग की वाणी।

बरस ज्योति बन गहन तिमिर में फूट मूक की बनकर भाषा।
चमक अन्ध की प्रखर दृष्टि बन, उमड़ गरीबी की बन आशा।

थे। उनकी कविता हृदय को झकझोर डालती है। वर्तमान भारत की दलित आत्मा उनकी कविता में जाग उठी है। दिनकर की कविताओं में माधुर्य की अपेक्षा ओज अधिक है। इसलिए प्राणों में स्फूर्ति उत्पन्न कर देने की शक्ति उनकी रचनाओं में है। हुंकार, सामधेनी, कुरूक्षेत्र और रश्मिरथी यदि उनकी ओजपूर्ण रचनाएँ है तो रसवन्ती, द्वन्द्वगीत चिन्तन प्रधान रचनाएँ हैं। दिनकर की रचनाओं में देशव्यापी जागरण का उच्च स्वर है। उसमें भारत के विगत स्वर्णयुग की सुनहरी किन्तु ममतामयी करुण स्मृति है और वर्तमान समय में आर्य संस्कृति की पतितावस्था के प्रति असंतोष के कारण वे क्रान्ति चाहते है :-

क्रांति धात्रि कविते जाग उठ, आडम्बर में आग लगा दे।
पतन, पाप, पाखण्ड जले, जग में ऐसी ज्वाला सुलगा दे।।

दिनकर जी की भाषा शुद्ध खड़ी बोली है। वे अपनी भाषा में अधिकांश तत्सम शब्दों का प्रयोग करते हैं। उनका शब्द चयन अत्यन्त पुष्ट और भावनुकूल होता है। उनकी भाषा उनके विचारों का पूर्ण रूप से अनुगमन करती है। शब्दों के तोड़-मरोड़ और व्याकरण की अशुद्धियों से उनकी भाषा मुक्त है। उनकी छन्द योजना नवीन है। उस पर उनका पूरा अधिकार है। अलंकारों के प्रयोग में स्वाभाविकता है। उनकी समस्त रचनाओं में भाव और भाषा का सामजंस्य बराबर मिलता है।

दिनकर अपने युग के प्रतिनिधि कवि है। उनकी भाषा में ओज, उनके भावों में क्रान्ति की ज्वाला और उनकी शैली में प्रवाह है। दिनकर की कविता में महर्षि दयानन्द की सी निडरता, भगतसिंह सा बलिदान, गांधी की सी निष्ठा एवं कबीर की सी सुधार भावना एवं स्वच्छन्दता विद्यमान है। वे आधुनिक हिन्दी काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि है।

गूँज शान्ति की सुखद साँस-सी, कलुष पूर्ण युग. कोलाहल में।
बरस सुधामय कनक वृष्टि बन, ताप तप्त जल के मरुस्थल में।

खींच स्वर्ग संगीत मधुर से जगती को जड़ता से ऊपर।
सुख की स्वर्ण कल्पना सी तू छा जाए कण-कण में भूपर।

क्या होगा अनुधार न वाष्प हो पड़े न विद्युत दीप जलाना।
मैं न अहित मानूँगा चाहे मुझे न नभ के पंथ चलाना।

तमसा के अति भव्य पुलिन पर, चित्रकूट के छाया तरु पर।
कहीं तपोवन के कुंजों में देना पर्ण कुटी का ही घर।

जहाँ तृणों में तू हँसती हो, बहती हो सरि में इठलाकर।
पर्व मनाती हो तरु -तरु पर, तू विहंग स्वर में गा-गाकर।

कन्दमूल, नीवार, भोगकर, सुलग इंगुदी तेल जलाकर।
जन समाज सन्तुष्ट रहे, हिलमिल आपस में प्रेम बढ़ाकर।

धर्म भिन्नता हो न सभी जन,शैल तरी में हिलमिल गावें।
ऊषा के स्वर्णिम प्रकाश में, भावुक भक्ति मुग्ध मन गावें।

अभ्यास

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

(1) भूषण ने अपने छन्दों में किन-किन राजाओं की प्रशंसा की है?

(2) शिवाजी के नगाड़ों की आवाज सुनकर राजाओं की क्या दशा होती है?

(3) दिनकर जी ने जनता को जगाने के लिए किसका आह्वान किया है?

लघु उत्तरीय प्रश्न

(1) कवि कैसे समाज की रचना करना चाहता है?

(2) 'लाखों क्रोंच कराह रहे हैं' से कवि का क्या आशय है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(1) शिवाजी के भय से मुगल रानियों की दशा का वर्णन भूषण ने किस प्रकार किया है ?

(2) छत्रसाल की बरछी का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

(3) कवि ने कविता के क्रांतिकारी रूप का आह्वान क्यों किया है?

(4) निम्नलिखित पद्याशों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए-

(क) दावा द्रुम दंड पर..... सेर सिवराज हैं।

(ख) क्रांतिधात्री ! कविते ..... बलि होती है।

(ग) उठ भूषण की भाव ..... निज युग की वाणी।

काव्य सौंदर्य-

1. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए-

पौन, सम्भू, कान्ह, मलिच्छ, सिब, सिथिल, आग

पढ़िए और समझिए-

गुरुजी की अपेक्षा थी कि मैं वैज्ञानिक बनूँ, लेकिन परिस्थितियों वश मैं उनकी अपेक्षा को पूरा न कर सका तो गुरुजी ने कहा कि तुमने मेरी उपेक्षा की है। मैंने उससे कहा कि मैं बिना किसी अवलम्ब के विज्ञान के क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ सकता और आप मुझे अविलम्ब विज्ञान के ज्ञाता के रूप में देखना चाहते हैं।

उपर्युक्त अनुच्छेद में रेखांकित शब्दो में उच्चारण की दृष्टि से लगभग समानता (अपेक्षा,उपेक्षा और अवलम्ब, अबिलम्ब) दिखाई देती है लेकिन उनके अर्थ भिन्न-भिन्न हैं। जैसा कि-

अपेक्षा- आवश्यकता, इच्छा

उपेक्षा– तिरस्कार, अवहेलना

अवलम्ब–सहारा

अविलम्ब–शीघ्र, तुरन्त

ध्यान दीजिए-

जिन शब्दों का उच्चारण लगभग समान हो किन्तु अर्थ भिन्न–भिन्न हो, उन्हें समोच्चारित भिन्नार्थक शब्द कहते हैं।

2. **निम्नलिखित समोच्चारित भिन्नार्थक शब्दों को इस प्रकार वाक्यों में प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए। अंश–अंस, वश–वंश, शेर–सेर, ग्रह–गृह, छात्र–क्षात्र, बात–वात।**

3. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों में अलंकार पहचानकर लिखिए–

   अ. क्रान्ति धात्रि! कविते जाग उठ आडम्बर में आग लगा दे।

   आ. फूट–फूट तू कवि कंठों से बन व्यापक निज युग की वाणी।

   इ. बरस सुधामय कनक दृष्टि बन ताप तप्त जन वक्षस्थल में।

पढ़िए और समझिए-

सौमित्र से घननाद का, रव अल्प भी न सहा गया।

निज शत्रु को देखे बिना, उनसे न तनिक रहा गया।

रघुवीर का आदेश ले, युद्धार्थ वे सजने लगे।

रण–वाद्य निर्घोष करके, धूम से बजने लगे।

यहाँ युद्ध क्षेत्र में मेघनाद की ललकार को लक्ष्मण सहन नहीं कर सके। वे श्रीराम से आदेश पाकर युद्ध के लिए तैयार हो गए और युद्ध की रणभेरी बज गई। उपर्युक्त पंक्तियों में मेघनाद की ललकार से लक्ष्मण के मन में उत्साह–भाव का संचार हो गया अत: यहाँ वीर रस है।

जहाँ किसी दृश्य को देखकर या ललकार सुनकर या साहित्य को पढ़कर मन में उत्साह के भाव का संचार हो, वहाँ वीर रस होता है।

सरस काव्य रचना में मन में तेज उत्पन्न करने वाले वर्णों से समन्वित कथन में ओज गुण होता है। ओज गुण वीर, भयानक और रौद्र रस में रहता है। उपर्युक्त उदाहरण में वीर रस के साथ–साथ ओज गुण भी है।

4. भूषण के संकलित अंश में से वीररस का एक उदाहरण लिखिए।

5. निम्नलिखित पंक्तियों में शब्दगुण लिखिए –

   राजा सिवराज के नगारन की धाक सुनि केते बादसाहन की छाती दरकति है।